अमावस का चाँद

(दास्तान-ए-ज़िन्दगी)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

अमावस का चाँद

(दास्तान-ए-ज़िन्दगी)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि

साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018
ISBN : 978-93-88167-87-1
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 150/-

AMAAVAS KA CHAND (GHAZAL) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पण

धरती माँ,

हर उस जीव,

दरिया व शजर को

जिसकी वज़ह से यह कायनात

ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

अनुक्रम

ऐसा भी होना था 21
ऐसी भी मज़बूरियाँ 22
यह कैसी मज़बूरियाँ 23
यह कैसी चाहत 24
क्या क्या होता है गली-गली 25
ऐसा क्यों है 27
नेता जी 28
जब से मैं ऐसा हुआ हूँ 29
मैं ऐसा क्यों हूँ : एक 30
मैं ऐसा क्यों हूँ : दो 31
मैं ऐसा क्यों हूँ : तीन 32
क्या ख़ूब रहते हैं 33
अनकूल-प्रतिकूल 34
ऐसे करना क्या है : एक 35
ऐसे करना क्या है : दो 36
दुनियादारी की कहानी : एक 37
दुनियादारी की कहानी : दो 38
वैसे तो सब कुछ है 39
ऐसा क्यों हुआ 40
ऐसे कैसे चलेगा 41
कहीं ऐसा तो नहीं 42
हम ऐसे क्यों नहीं 43
ऐसा क्यों है 44
कभी ऐसा न करें 45
औरत की अहमीयत 46
क्या ख़ूब है : एक 47
क्या ख़ूब है : दो 49
क्या ख़ूब है : तीन 50
ऐसा तो हो नहीं जाता 51
ऐसा भी होता है : एक 52
ऐसा भी होता है : दो 53
ऐसा ही होता रहेगा 54
इन्सानी फ़ितरत 55
क्या ख़ूब देते हैं 56
क्या-क्या हो रहे हैं 57
इस तरह तो ना किया जाये 58
ऐसा क्यों होता है 59
क्या-क्या देखना है 60
ऐसा क्यों होना है 61
ऐसा होना चाहिये 62
हाय क्या मज़बूरी है 63
क्या-क्या नहीं था 64
औरत का दर्द 65
हालात-ए-वतन 66
कैसा लगता है 68
ज़माने की रिवायतें 69
शराफ़त का फलसफ़ा 71
समझदारी 73
जब ऐसा होता है तो 74

रिश्तों की फ़ितरत 75
हिन्दुस्तान की शख़्सियत 76
बेरहम इन्सानियत 77
यह कैसी होली 78
मुमक़िन नामुमक़िन 80
हकीक़त : एक 81
हकीक़त : दो 82
पानी जैसे इन्सान 83
ख़ुशहाल ज़िन्दगी 85
अज़ाब-ए-ज़िन्दगी 86
माँ की महानता 88
नासमझ ज़िन्दगी 90
इन्सानियत के तसव्वुर 92
क्या हो गया है : एक 94
क्यों हो गया है : दो 95
बदहाल ज़िन्दगी 96
बदनसीब इन्सानियत 97
दीपावली ऐसी हो 98
क़रार बेकार है 100
जब तक 102
ऐसा करके ही 104
ऐसा करके 105
ऐतबार करके 106
ऐसा इज़हार करोगे 107
ज़िन्दगी के रंग 108
बेबस ज़िन्दगी 109
एक दिन 110
ऐसा ही होगा 111
करनी का फल 112
ऐसा ही होता है 113
मज़हब का फलसफ़ा 114
ज़िन्दगी का फलसफ़ा 115
आईना 116
अक़्स 117
लाचार इल्म 118
यह इन्साफ़ नहीं 119
क्यों और कैसे : एक 120
क्या और कैसे : दो 121
कैफ़ियत 122
बेहाल ज़िन्दगी : एक 123
बेहाल ज़िन्दगी : दो 124
दुनियादारी : एक 125
दुनियादारी : दो 126
ऐतबार 127
बेबसी और लाचारी 128
शर्मसार बेगुनाह 129
क्या हो जाये 130
अगर ऐसा नहीं 131
किस-किस को क्या कहोगे 132

सुभाषित रचते हैं 'साथी'

कविता कैसी भी हो एक कला है। कविता सृजन के लिये आपकी चेतना में अनिवार्य रूप से एक विशिष्ठ कला बोध एवं अभिव्यक्ति सामर्थ होना चाहिये। इन तत्वों के अभाव में आपकी अभिव्यक्त होने की छटपटाहट के परिणाम में जो कुछ भी सृजित होता है वो कविता से थोड़ा इतर कम या ज़्यादा हो सकता है। इस प्रक्रिया में ये भी सम्भव है कि आपमें ये दो आवश्यक तत्व तो हों किन्तु किसी प्रकार से बाधित हों। वरना अभिव्यक्त होने की इतनी तीव्र छटपटाहट क्यों ? जिस व्यक्ति के पास मस्तिष्क है और भाषा भी है वह निरन्तर कुछ ना कुछ अनुभूत करता है और सोचता है। उसका अपने आप से लगातार संवाद भी होता है। उसके अन्दर सार्थक वाक्यों की ढलाई निरन्तर होती है। किन्तु किसी में ही ऐसी ललक होती है कि उसके दिमाग़ में जन्म लेने वाला प्रत्येक शब्द काग़ज़ पर उतर जाये और हो सके तो छप भी जाये।

श्री अजय कुमार शर्मा 'साथी' जहानवी के अन्तर में भी अभिव्यक्त होने की गज़ब की छटपटाहट है और उनकी ललक भी उनके भीतर जन्मने वाले प्रत्येक शब्द को काग़ज़ पर अंकित करने की है। वे ये करते भी हैं। वे काग़ज़ पर उतरी तहरीर को अपने मन मुताबिक नाम दे सकते हैं। ठीक वैसे ही आप भी पढ़ते वक़्त नामकरण के लिये स्वतन्त्र हैं। इतना अवश्य है कि 'साथी' जहानवी की ज़मीन बेहद उर्वर है। वह ओस के गीलेपन से धानी हो जाती है। दूर-दूर तक कुछ न कुछ उग आता है। घास भी घास के फूल भी। बहुत कुछ उपयोगी भी होता है। हरा तो खैर होता ही है। 'साथी' जहानवी की सृजन सामर्थ्य को अन्य उपमाओं से भी समझा जा सकता है। जैसे ग्लेशियर पिघलता है। जैसे बाढ़ आती है। कभी आप शाम को चार से छह बजे के बीच मुम्बई के चर्चगेट स्टेशन पर हो तो जैसे रेले के बाद रेला प्लेट फार्म पर आता है ठीक वैसे ही 'साथी' जहानवी के दिमाग़ में पंक्तियाँ आती हैं। एसी फर्स्ट के टिकट धारियों से लेकर बिना टिकट यात्रियों की तरह से। उनमें से कुछ यात्रियों को मालायें पहना

कर विदा भी किया जाता है। और कुछ का मालायें पहनाकर स्वागत भी किया जाता है। बाकी ढेरों अप्रासंगिक हों तो हों।

'साथी' जहानवी को बहुत अच्छी बातें सूझती हैं। वे बड़ी सटीक उपमा के साथ असंख्य लोगों के जीवन जीने की व्याख्या करते हैं-

जीने की मज़बूरी में लाचारी की ज़िन्दगी
हवस की नज़र में नौकरानी की ज़िन्दगी

पुरूष लम्पटता के सार्वभौमिक सत्य का उत्धाटन तो है ही लाखों गृहस्थियों में काम करने वाली किशोरियों, युवतियों और प्रौढ़ाओं को जिस ज़िल्लत का सामना करना पड़ता है वो सभी साक्षात हो जाता है। यही ज़िल्लत और अपमान करोड़ों लोगों का सत्य है। 'साथी' जी निश्चित रूप से बेहद संवेदनशील हैं। उनकी संवेदना कई बार दार्शनिकता में परिवर्तित हो जाती है। उनकी भाषा स्वत: सधुक्खड़ी (साधु संतों की भाषा) हो जाती है। फिर वे कविता नहीं सुभाषित रचते हैं। यद्यपि यही सधुक्खड़ी पहेली भी लगती है। सत्य, केवल सत्य और सत्य की जिद्द भी सुकरात का दीनो-ईमान था। इस बात को इस रूप में समझना कि सुकरात एक पैग़म्बर थे तथा उन्होंने संसार में विशुद्ध सत्य के धर्म की स्थापना की एक अनोखी सूझ है। उन्हें अनेक बार ऐसा ही अद्भुत सूझता है। मज़हब के दूध में नींबू निचोड़ने का विचार भी ऐसा ही विचार है। उनकी अभिव्यक्ति कई बार बेहद ताक़तवर एंव झिंझोड़ने वाली होती है-

मज़बूर की जान लेवा चीख़-पुकार
उसे ज़ुल्म सहने की तमीज़ नहीं है

नील रक़्त की सामन्ती सम्भ्रान्तता पर अद्भुत चोट है। किसी तरह सरकारी अफ़सरी पा जाने वाले साहबों का ठसका तो सभी ने देखा होगा। 'आप में तो बात करने की तमीज़ नहीं है' यह उनकी पहली प्रतिक्रिया होती है। बात में क्या है उससे कोई मतलब नहीं है। बात करने की तमीज़ उनकी प्राथमिकता है।

'साथी' जी कविता के कलापक्ष तथा अभिव्यक्ति संगति पर और अधिक मेहनत करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। उनका लेखन सार्थक होगा क्योंकि वह बहुत कुछ कहना चाहते हैं। जैसे-

दोज़ख भी तो शर्म से पानी-पानी है
हालात जबसे ज़माने के देख आई है

उनको सुना जायेगा तभी हम जीवन की नारकीय स्थितियों से मुक्त होने के लिये तड़पेंगे।

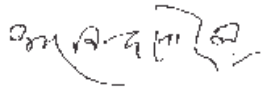

-अरविन्द सोरल
सराय कायस्थान कोटा
मो. : 9928199547

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अज़ूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

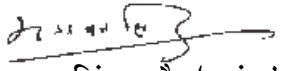

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'

(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)

346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001

मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेज़ुबान तसव्वुर के मंजरे आम (विमोचन) के बाद अब एक साथ सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तसव्वुर, मुहब्बत एक ईबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह अमावस का चाँद और क़तरा-क़तरा दरिया आपकी नज़र कर रहा हूँ।

कोई कहता है कि ज़िन्दगी प्यार का गीत है, कोई कहता है कि ज़िन्दगी ग़मों का सागर है जिसे हर हाल में पीना ही पड़ेगा,कोई कहता है कि ज़िन्दगी को धुएँ में उड़ाता चला गया। आज तक आख़िर मैं यह समझ नहीं पाया कि ज़िन्दगी और दुनियादारी है क्या। कोई मोह माया में जकड़ा है तो कोई परिवार मोह में जकड़ा हुआ है। आम आदमी किसी न किसी मोह में जकड़ा हुआ है चाहे उसमें उसका स्वार्थ हो या नहीं हो। आम आदमी आज किसी न किसी रूप में बेबस, लाचार और मज़बूर है। कोई आर्थिक रूप से मज़बूर है तो कोई शारीरिक रूप से लाचार है यानि कि कोई भी इन्सान दुनियादारी की वज़ह से ज़िन्दगी में सन्तुष्ट नहीं है। एक इन्सान के कई रूप होते हैं उसे न चाहते हुये भी वह सब कुछ करना पड़ता है जो वह दिल से नहीं करना चाहता है। यानि कि वह इतना मज़बूर होता है कि उसे अपनी आत्मा को कई बार मारना पड़ता है।

इस ज़माने में दुनियादारी निभाने की वज़ह से बहुत कुछ ग़लत होता रहता है जिसे हम सब देखते और सुनते रहते हैं। यह सब-कुछ देखकर, सुनकर और सहकर जब भी मन दुखी होता है तो मैं बेचैन हो जाता हूँ और अपनी इस बेचैनी को ही लिख

लेता हूँ जो कि इन काव्य संग्रहों के रूप में आपके सामने है। मुझे नहीं पता कि गीत, कविता और ग़ज़ल क्या होती है मुझे तो सिर्फ़ इतना मालूम है कि मेरी पंक्तियाँ आपको कुछ सोचने और समझने के लिये मज़बूर करें और आप ज़िन्दगी में दुनियादारी का आईना देख और समझ सकें कि यह दुनियादारी और ज़िन्दगी है क्या ?

हर कोई मोक्ष और वैराग्य की सिर्फ़ बातें करता ज़रूर है मगर उस तरह का व्यवहार अपनी ज़िन्दगी के सफ़र में नहीं करता। इस विरोधाभास का नाम ही दुनियादारी है। इस ज़माने में इस तरह के हालातों से रोज़ाना वास्ता पड़ता है। जैसे असहाय बुर्जुग माता-पिता वृद्धाश्रम में साधन सम्पन्न बेटों के होते हुए भी यतीमों की तरह नर्क का जीवन जी रहे हैं तो कोई भीख माँगकर फुटपाथ पर जर्ज़र हालात में गुज़र बसर कर रहा है।

कभी कई पति पत्नी में विवाद इतना बढ़ जाता है कि तलाकशुदा का नर्क जैसा जीवन जी रहे हैं तो कोई शादी और परिवार को बन्धन मान कर सिर्फ़ 'लिव इन रिलेशन' की तरह रह रहा है तो कोई अपना सुक़ून समलैंगिक सम्बन्धों में खोज रहा है। हर रोज छेड़खानी और बलात्कार की घटनायें आम बात हो गई है। आज बहू-बेटियाँ घर परिवार में भी सुरक्षित नहीं है। अपने ही इनके साथ ऐसा बुरा व्यवहार कर रहे हैं कि बहू-बेटियाँ सदमे में गुज़र बसर कर रही है। कुछ बेटियों को तो कोख़ में ही मार दिया जाता है। एक इन्सान की इससे ज़्यादा हैवानियत और क्या हो सकती है। ना कुछ बात पर पड़ौसी एक-दूसरे से ईर्ष्या और रंजिश रखते हैं जबकि एक पड़ौसी ही मुसीबत में सबसे पहले काम आता है। धन सम्पत्ति के विवाद में भाई-भाई एक-दूसरे के दुश्मन होकर ख़ून के प्यासे हो जाते हैं। आजकल के बच्चों में अब पहले जैसे संस्कार भी नहीं रहे नि:सन्देह समाज के ऊपर टी.वी. और मोबाईल का ऐसा दुष्प्रभाव है कि हर कोई इन्सान हैरान और परेशान है।

आधुनिक जीवन शैली में हर इन्सान की आवश्यकतायें इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि उसके साधन कम पड़ जाते हैं तो अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये ऋण के दुश्चक्र में ऐसा फँस जाता है कि किस्तों की ज़िन्दगी जी कर कर्ज़ के बोझ तले दबकर मरने को मज़बूर हो जाता है ऐसा सब-कुछ दिखावे की दुनियादारी की वज़ह से हो रहा है। आधुनिक भोग विलास के साधन इतने ज़्यादा महँगें हैं कि आम आदमी को कर्ज़ के दलदल में फँसना ही पड़ता है।

वर्तमान परिवेश में आम आदमी की जीवन शैली बिना शारीरिक श्रम के इतनी ज़्यादा आरामदायक हो गई है जबकि उसका खान-पान और रहन सहन ऐसा हो रहा है कि उसे कई लाइलाज़ बीमारियाँ हो जाती है जिससे वह सारे जीवन के लिये रोगी हो जाता है। प्रकृति से उसकी दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं इस वज़ह से वह शारीरिक और मानसिक रूप से रोगी होता जा रहा है। वातावरण इतना ज़्यादा प्रदूषित हो गया है कि हवा और पानी ज़हरीले हो गये है जबकि बिना हवा पानी के जीवन मुमक़िन नहीं है। खाने पीने की वस्तुओं में मिलावट इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि कैंसर जैसी कई गम्भीर बीमारियाँ आम इन्सान के लिये आम बात हो गई है। ध्वनि प्रदुषण से आम आदमी मानसिक रोगी हो गया है।

इन्सानों ने प्रकृति का इतना ज़्यादा अन्धा धुन्ध दोहन कर लिया है कि प्रकृति में असन्तुलन पैदा हो गया है। वातावरण इतना ज़्यादा ख़राब हो गया है कि मौसम का सन्तुलन भी बिगड़ गया है जिससे बाढ़, भूकम्प, सूखा और तूफ़ान के गम्भीर हालात पैदा हो रहे हैं। मौसम चक्र के बिगड़ने से प्रकृति के समस्त जीव जन्तुओं पर गम्भीर परिणामों से अत्यधिक नुकसान हो रहा है।

समाज में रिश्वत, भ्रष्टाचार, जातिवाद, छुआछूत, भेदभाव, भाई भतीजावाद, आरक्षण, नौकरशाही, राजनीति, धनबल, बाहुबल, भ्रूण हत्या, आतंकवाद, घोटाले इत्यादि अपराध अब इस अवस्था में पहुँच गये हैं कि कैंसर की तरह लाइलाज हो गये हैं जिससे समाज और देश को इतना ज़्यादा नुकसान हो रहा है कि सामाजिक और सरकारी व्यवस्थायें बद से भी बदतर हालात में पहुँच गई हैं।

भारत कृषि प्रदान देश है यहाँ की अधिकतर जनसंख्या कृषि पर आधारित है मगर सरकार की बेरुखी की वज़ह से खेती करना अब इतना ज़्यादा महँगा और नुकसानदायक होता जा रहा है कि आम किसान कर्ज़ के दलदल में फँसा हुआ है कई किसान तो इस वज़ह से आत्महत्या कर चुके हैं। किसान को अपनी फसल का उचित मूल्य नहीं मिलने से उसके परिवार का पेट पालना अब मुश्क़िल होता जा रहा है। इस लिये अब किसान खेती की बज़ाय मेहनत मज़दूरी करने को विवश है। गाँव में रोजगार नहीं होने की वज़ह से गाँव उजड़ रहे हैं और शहरों में जनसंख्या का अत्यधिक घनत्व होने की वज़ह से भेड़ बकरियों की तरह से इन्सान शहरों में रहने को मज़बूर हैं।

इस तरह जो असन्तुलन पैदा हो रहा है वह देश की अर्थ व्यवस्था के लिये अत्यधिक घातक है।

भारत देश में आर्थिक असन्तुलन भी बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। अस्सी प्रतिशत लोगों के पास सिर्फ़ बीस प्रतिशत सम्पदा है। अमीरी गरीबी की खाई इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि कुछ धन कुबेरों का देश की तीन चौथाई अर्थ व्यवस्था पर कब्जा है जो किसी भी समाज और देश के लिये अत्यधिक घातक है। देश में बेरोजगारी इस हद तक बढ़ गई है कि नौजवान अपराधिक गतिविधियों में बहुत गहरे स्तर तक लिप्त होते जा रहे हैं जिससे लूटपाट और हत्या जैसे अपराध आम बात हो गई है।

पुलिस व कानून व्यवस्थायें इतनी लचर है कि अपराधियों के हौंसले इतने बुलन्द है कि बड़े से बड़े अपराधों को भी सरे आम अन्ज़ाम देते हैं और बेख़ौफ़ शान से विचरण करते है जिससे आम आदमी दहशत में गुज़र बसर करता है। शिक्षा सिर्फ़ नौकरी प्राप्त करने का माध्यम भर रह गई है। शिक्षा में से नैतिक शिक्षा और संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। जिससे भावी पीढ़ी समाज और देश के लिये गैर जिम्मेदार होती जा रही है। वैसे भी शिक्षा अब इतनी ज़्यादा महँगी हो गई है कि आम आदमी के लिये लोहे के चने चबाने जैसे है। आज का युवा इतना ज़्यादा भ्रमित है कि उसे समझ नहीं आता कि वह क्या करे। कई युवा तो मानसिक रोगी हो कर आत्म हत्या तक कर लेते हैं।

समाज में महिलाओं और बेटियों की दशा बद से बदतर होती जा रही है। उनके साथ भेदभाव और सौतेला व्यवहार किया जाता है जब तक महिलाओं और बेटियों का विकास नहीं होगा तब तक देश और समाज का विकास सम्भव नहीं होगा। आज का युवा पश्चिम संस्कृति से इतनी बुरी तरह से प्रभावित है कि उसका पहनावा और रहन-सहन समाज के लिये बहुत ज़्यादा हानिकारक है। प्रतिभावान युवाओं को देश में उचित अवसर नहीं मिलने की वज़ह से कुशल प्रतिभा देश के बाहर चली जाती है जिससे देश का सम्पूर्ण विकास नहीं हो पाता है। जातिवाद का सर्प समाज को काले नाग की तरह से डस रहा है। छुआछूत से सामाजिक भेदभाव उत्पन्न हो रहे हैं जिससे समाज में एक दूसरे के प्रति रंजिश, घृणा और नफ़रत की आग से देश और समाज जल रहा है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और ग़लतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर मेरे दिली जज़्बात और अहसास को मेरे अपने निजी विचार के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैगाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु', श्री रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी गुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा तो ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िन्दगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

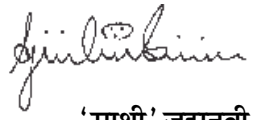

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी के जज़्बात का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

ऐसा भी होना था

यह तजुर्बा भी ज़िन्दगी में होना था
हक़ और ईमान से खाली दोना था

रेशमी बिस्तर पे करवटें बदलते रहे
पत्थर मज़दूर का नरम बिछौना था

ज़ीस्त गुज़री बच्चे लायक बनाने में
मकाँ में माँ बाप के लिये कौना था

ख़ुद्दारी से आशियाना महकता कैसे
दूसरों के हाथों में जो खिलौना था

तबीयत नासाज़[1] दौलती दवाखाने में
झोंपड़ियों में चैन की नींद सोना था

ज़ुल्म व सितम कैसे करता ज़ालिम
शराफ़त के आगे हर कोई बौना था

रुह अजर और अमर है तो 'साथी'
बदन जलाकर फिर क्या खोना था।

1. नासाज=बुराहाल

ऐसी भी मज़बूरियाँ

रिश्वत से सेवा दे उसे ही अफ़सर कहते हैं
मरे इन्सान के प्रमोशन को दफ़्तर कहते हैं

क़ानून क़ायदे की बात करने वाले इंसाँ को
नौजवाँ, अंग्रेजों के ज़माने का जेलर कहते हैं

यह दुनिया ये महफ़िल तो मेरे काम की नहीं
ज़माने के सताये हुये ऐसा सुख़नवर[1] कहते हैं

तवायफ़ के कोठे में गज़रे और मुज़रे को ही
लाचार देवदास सुहागन का सिन्दूर कहते हैं

ख़्वाबों में हेमा मालनी के दिख जाने को ही
रंगीन मिजाज़ अपने आपको धर्मेंदर कहते हैं

बिल्ली के भाग से छींका टूटने को ही 'साथी'
कामचोर औ आलसी उसे मुक़द्दर कहते हैं।

1. सुख़नवर=कवि

यह कैसी मज़बूरियाँ

अमीरो-ग़रीब ख़ाक़[1] में मिलाना पड़ता है
दस्त[2] सादा या चन्दन जलाना पड़ता है

जायज़ कमाई से दाल रोटी ही नसीब
नाजायज़ को मेहनत बताना पड़ता है

जब तक ज़िन्दा रहें मुर्दे की तरह जियें
ऐसे इन्सानों को भी दफ़नाना पड़ता है

ख़ून का रिश्ता नहीं है मगर ऐसा है कि
उनकी मौत पे भी आँसू बहाना पड़ता है

बच्चे के दूध के लिये मज़बूरियाँ ऐसी कि
आटे का घोल बना कर पिलाना पड़ता है

रूठे हुये को मनाना इतना मुश्क़िल है कि
बस थाली में एक चाँद दिखाना पड़ता है

जब वक़्त व क़िस्मत ख़राब हो तो 'साथी'
तो गीले दरख़्तों[3] को भी जलाना पड़ता है।

1. ख़ाक़=मिट्टी **2.** दस्त=लकड़ी 3. दरख़्त=पेड़।

यह कैसी चाहत

मासूम बच्चों की शरारत पसन्द है
जाँ ले सके ऐसी अदावत[1] पसन्द है

वक़्ते नमाज जलज़ला[2] भी आये तो
तब भी फ़कीर को इबादत[3] पसन्द है

अज़ाब होती है चोरी और बईमानी
माखन चोर की बदनीयत पसन्द है

हीरे और जवाहरात उसको बेमानी
ख़ुदा को सिर्फ अक़ीदत[5] पसन्द है

बेटे-बहुओं से इतनी सी गुज़ारिश
बूढ़े माँ-बाप को ख़िदमत[6] पसन्द है

बीमार के चेहरे पर आ जाये रौनक़
मरीज़ को नर्स की सूरत पसन्द है

निक़ाह अगर तिजारत[7] है तो 'साथी'
दहेज के ख़िलाफ़ बगावत पसन्द है।

1. अदावत=दुश्मनी **2.** ज़लज़ला=आँधी, तूफ़ान **3.** इबादत=प्रार्थना
4. अज़ाब=अभिशाप 5. अक़ीदत=श्रद्धा **6.** ख़िदमत=सेवा **7.** तिजारत=व्यापार।

क्या क्या होता है गली-गली

नफ़रत से इंसान जलता है गली गली
प्यार मुहब्बत में महकता है गली गली

बिना शहादत कौन फ़रिश्ता बन पाया
शहीद को सलाम मिलता है गली गली

सुबूत दिल के तूफ़ान का तबाही होना
जल ही जीवन, उफ़नता है गली गली

इश्क़ में दो बदन एक जान हो जायें तो
दीवाना सर पे संग खाता है गली-गली

बन्धन से आज़ाद होकर ही मस्त होते हैं
तो फ़कीर गीत गुनगुनाता है गली गली

बेगुनाह को सज़ा सोच समझ कर देना
बेगुनाही का सुबूत चीखता है गली गली

दूसरों के घर जलाकर रोशन मत होना
आग का लावा तेज़ बहता है गली गली

ख़ुद्दार और सन्तोषी सदा सुखी रहता
लालची इन्साँ तो भटकता है गली गली

नेकी करके दरिया में डालता जा 'साथी'
भलाई का तो चर्चा होता है गली गली।

ऐसा क्यों है

बुरे इरादों से रहबर[1] ज्ञानी क्यों है
सच बोलने वाला अज्ञानी क्यों है

अग़र रगों में ख़ून दौड़ रहा है तो
इंसान शर्म से पानी-पानी क्यों है

वक़्त पे तो कभी काम आया नहीं
फिर उसकी ऐसी मेहमानी क्यों है

अरसा गुज़र गया उसे गुज़रे हुये
दिलों में अब तक कहानी क्यों है

मालूम है कि दौलत नाजायज़ है
ज़माने में फिर वही दानी क्यों है

दीनो-ईमान बेचता रोटी के लिये
ज़िंदा मुर्दे जैसी ज़िंदगानी क्यों है

गुनाह होते हुये देखते रहे 'साथी'
मर्द में ऐसी नामर्द जवानी क्यों है।

1. रहबर=मार्गदर्शक

नेता जी

थाने में एफ.आई.आर. दर्ज़ पर
तो नेताजी क़ानून की अर्ज़ पर

दर-दर की ज़ियारत व हाज़री
नेताजी है पाँच सालाना उर्स पर

चुनावी मेले में खेल तमाशे मुफ़्त
मतदाता है नेताजी के ख़र्च पर

मज़हब में सियासतों का दंगल
ख़ूनी दंगे और फ़साद धर्म पर

घपले, भ्रष्टाचार और जमाख़ोरी
नेताजी स्विस बैंक की तर्ज़ पर

चुनावों में बड़े-बड़े वादे व इरादे
पूरा करते वक़्त नेताजी शर्म पर

बेहद मुश्क़िलों से सज़ा क्या हुई
फिर तो नेताजी दिल के दर्द पर

जब हाथ से कुर्सी क्या गई 'साथी'
तो नेता जी की ज़िन्दगी नर्क पर।

1. ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **2.** उर्स=मेला।

जब से मैं ऐसा हुआ हूँ

अपनी ज़िन्दगी में अक़्सर विफल हुआ हूँ
इस वज़ह से ही, मैं हमेशा सफल हुआ हूँ

अपने हाथ ही अपने गिरेबान पर जाते हैं
जब से ही मैं आईने की हमशक़्ल हुआ हूँ

जितना लुटाता हूँ उससे ज़्यादा बढ़ता है
ग़रीबों की दुआ से ही मै धनबल हुआ हूँ

इरादे नेक हो तो कारवाँ बढ़ ही जाता है
ज़ुल्म और सितम से कहाँ निर्बल हुआ हूँ

दिन का चैन और रातों की नींद हराम है
गुनहग़ारों का जब से ही मैं वक़ील हुआ हूँ

बद्दुआओं से जीना बेहाल और अज़ाब[1] है
बेगुनाह के इन्साफ़ का मैं क़ातिल हुआ हूँ

रिश्ते-नाते यारी दोस्ती सब कुछ बेमानी है
जब मैं रिश्तों का शिकारी मोबाइल हुआ हूँ

बाप बड़ा न भैया सबसे बड़ा होता रुपैया
ज़माने में जबसे मैं ख़ुदग़र्ज़ अक़्ल हुआ हूँ

बेहद चैन और सुक़ून से रहता है 'साथी'
दिमाग़ी फ़ितरत से ही जब पैदल हुआ हूँ।

1. अजाब = अभिशाप

मैं ऐसा क्यों हूँ : एक

बिना मतलब के प्यार का दीवानगी हूँ
उल्फ़त[1] के रंग में रंगा हुआ सतरंगी हूँ

तैरना नहीं आता यह मालूम है मुझको
डूबते के लिए एक तिनका ज़िन्दगी हूँ

पत्थर के सीने में एक मोम का दिल है
हताश व ग़मगीन के लिये दिया बाती हूँ

मेरे सवालात ही नाइंसाफ़ी के जवाब थे
बेगुनाही की सज़ा याफ़्ता ज़िन्दगानी हूँ

ज़िन्दगी व मौत कितनी ख़तरनाक होगी
शायरी के लिये एक जज़्बाती जेहादी हूँ

वैसे तो मददगार हूँ मज़बूरों का 'साथी'
भूत और पिशाच के लिये बजरंगबली हूँ।

1. उल्फ़त=प्यार, 2. जेहादी=धर्म के लिये लड़ने वाला।

मैं ऐसा क्यों हूँ : दो

दिल की बात मानने का आदी हूँ
अब मैं ख़ुद का ख़ूँखार अपराधी हूँ

लुटाके इल्म[1] और हुनर की दौलत
अपनी रह गुज़र का ख़ुद दागी हूँ

ज़िंदा मुर्दो की तरह बेबस ज़िन्दगी
अपने ख़्वाबों-ख़यालों का दागी हूँ

लगाकर शराफ़त के घोड़ों पर दाव
साज़िशे ज़माने से हारा जुआरी हूँ

तक़्दीर कब ग़र्दिशे दौरां[2] हो जाये
दौलत होने के बावजूद भिखारी हूँ

रोजी-रोटी बहुत मुश्क़िल है 'साथी'
मेहनत की कमाई से कैसे दानी हूँ।

1. इल्म=ज्ञान **2.** गर्दिशे दौरां=बुरा वक़्त।

मैं ऐसा क्यों हूँ : तीन

जफ़ा की क़श्ती में सितमगर शिकारी हूँ
वफ़ा के समन्दर में तैरती एक मछली हूँ

सहरा के सफ़र में मुझे भी ज़रूरत होगी
भूखे और प्यासे के लिए फिर भी पानी हूँ

बचपन से चुका रहा हूँ माँ-बाप का क़र्ज़
सूदखोर[1] के हिसाब में अभी तक बाक़ी हूँ

क़ायल और हैरान है मेरी क़ाबिलियत से
भाई भतीजावाद से अब तक जमादारी हूँ

साज़िशे कब्र में दफ़्न की बेकार कोशिशें
दिलजलों के लिए एक मुद्दत[2] से दिल्ली हूँ

एक फीसदी[3] नुकसान हो जमाने का 'साथी'
तो दुनिया के लिये सौ फीसदी गन्दगी हूँ।

1. सूदखोर=ब्याज खाने वाला **2.** मुद्दत=लम्बा समय **3.** फीसदी=प्रतिशत।

क्या ख़ूब रहते हैं

जो दुनियादारी से बेख़बर रहते हैं
वही तो दुनिया में मशहूर रहते हैं

मन्ज़िल कैसे मिली यह बेमानी है
जो जीतते वही सिकन्दर रहते हैं

चलते रहते हैं दरिया के मानिन्द
एक न एक दिन समन्दर रहते हैं

महलों में तो बेचैनी और परेशानी
झोंपड़ी में मौज़ से फ़कीर रहते हैं

ज़ुबान से तो शहद टपकाते रहते
दिल और दिमाग़ से ज़हर रहते हैं

लेने के बाद तो देने का नाम नहीं
अपने मकान से रफ़ूचक्कर रहते हैं

भरोसा नहीं अपनी क़ाबिलियत पर
ग़ैर के ज़ेहन से घनचक्कर रहते हैं

जोशो-जुनूं अपना सर कटवाने का
ज़माने के लिये वो ही सर रहते हैं

डर के आगे ही तो जीत है 'साथी'
दुनिया में वो ही कलन्दर रहते हैं।

अनकूल-प्रतिकूल

ज़िन्दगी उसकी माक़ूल[1] है
मेहनत से कमाई वसूल है

फांसी की सज़ा होगी तो
सच बोलना भी तो भूल है

ख़ुदग़र्ज़ सितमग़र दुनिया
ज़माने के मंत्रों का मूल है

हँसना जिसका फ़लसफ़ा[2]
ठण्डा-ठण्डा क्या 'कूल' है

नौ सौ चूहे खाकर के हज़
क्या यह इबादत क़ुबूल है

बाप के हम-उम्र शौहर हो
तो सुहाग की सेज शूल है

जिस्म फरोशी हो तिजारत[3]
नशीला बदन क्या फूल है

जो बदजुबान व बदगुमान
उसकी जुबाँ ही त्रिशूल है।

1. माकूल=उचित **2.** फ़लसफ़ा=आदर्श विचार **3.** तिजारत=व्यापार

ऐसे करना क्या है : एक

आँखें बन्द कर जुल्म व सितम देखना क्या है
रगों में ख़ून इस तरह से दौड़ते रहना क्या है

साज़िश के तहख़ाने में गुनाहों के चराग़ रोशन
अन्धेरे में हक़ीकत के रोशनदान बनना क्या है

आये दिन सरहद पर सैनिकों की शहादत हो
फिर संसद का चूड़ियाँ पहनकर रहना क्या है

साथ रहना सिर्फ़ समझौता और लाचारी है तो
फिर सूनी माँग का मंगल सूत्र पहनना क्या है

बहुआओं से तो ज़िन्दगी बदहाल हो जाती है
किसी और को जलाकर उजाला करना क्या है

'साथी' ऐतबार से ही इन्सान की क़ीमत होती
तो जुबान देकर, फिर वादे से मुकरना क्या है।

ऐसे करना क्या है : दो

इस तरह शौहरत में चार चाँद लगना क्या है
जफ़ा के गुलशन में वफ़ा का महकना क्या है

सितमग़र सोचकर बेहद हैरान व परेशान है कि
मेरी ख़ुदक़ुशी के बाद अब उन्हें करना क्या है

ख़रीद लिया तन व मन मनचाही क़ीमत देकर
इस तरह मुमताज का शाहजहाँ बनना क्या है

क्या हालात इतने ख़राब भी हो जाया करते हैं
भुखमरी में भिखारियों की रोटी लूटना क्या है

हम भी तुम्हारे ख़ैर ख़्वाह[1] है कोई दुश्मन नहीं
इस तरह फिर हम से होशियार रहना क्या है

काजल से बेहद काला कलंक होता है 'साथी'
फिर किसी की इज़्जत आबरू लूटना क्या है।

1. खैर ख़्वाह=शुभ चिन्तक।

दुनियादारी की कहानी : एक

अब शख़्सियत को छुपाने की लाचारी है
एक बार फिर बेआबरू होने की बारी है

ये तक़्दीर भी अज़ीब से खेल खेलती है
पहले ग़म भारी थे अब ख़ुशियाँ भारी है

अश्क़ ख़ुशियों के होते या फिर ग़मों के
उनका वक़्त पे बहना एक ज़िम्मेदारी है

रहता है अपने ही हालात में मस्त मौला
ज़ुबान पर रहती हक़ीक़त की ख़ुमारी है

ज़माने का सताया हुआ कैसे यक़ीं करे
लगता कि अब रिश्तेदार भी बाज़ारी है

आदत थी तन्हाई और जुदाई की 'साथी'
महफ़िल की रौनक़ भी अब तो कटारी है।

दुनियादारी की कहानी : दो

जो अपने दिलो-दिमाग़ का कर्मचारी है
ख़ुशनुमा ज़िन्दगी का रहता अधिकारी है

ख़्वाबों की ताबीरें[1] हक़ीकत हो सकती है
ख़यालात के लिये दिल में ज़वाबदारी है

बातों से कब तक बहलाओगे किसी को
आती नहीं दिल लगाने की कलाकारी है

बहुत मुश्क़िल है दिलों में मकाम करना
बहुत खोकर कुछ पाना ही अधिकारी है

कब तक मिलते रहेंगे हम चुपके-चुपके
एक दिन तो जमाने की चलेगी आरी है

दिल औ दिमाग़ से जब तक पंगा न ले
'साथी' शायरी में फिर कहाँ ईमानदारी है।

1. ख़्वाबों की ताबीरें=स्वप्न फल।

वैसे तो सब कुछ है

वैसे तो कोई भी गुनाहगार नहीं है
दिलो-दिमाग़ में जब पुकार नहीं है

अक़ीदत[1] से जहाँ पर विचार नहीं है
इबादत[2] के लायक वो मज़ार नहीं है

जुदाई औ तन्हाई को कैसे समझेगा
यक़ीनन उसे किसी से प्यार नहीं है

तन्हा खड़ा है अपनों की महफ़िल में
किसी के गुनाह का राज़दार नहीं है

गाँव में हरियाली व ख़ुशहाली रहती
क्या इलाके में कोई ज़मींदार नहीं है

सुबूत के बावजूद भी कलम टूट गई
इन्साफ़ का देवता ईमानदार नहीं है

मुलाक़ातें बेअसर और बेमज़ा 'साथी'
किसी के मिलने का इंतज़ार नहीं है।

1. अक़ीदत=श्रद्धा **2.** इबादत=प्रार्थना।

ऐसा क्यों हुआ

ज़िन्दगी कौन से मोड़ पर ले आई है
एक तरफ कुआँ दूसरी तरफ खाई है

क्या हुआ जो ज़माना ख़फ़ा हो गया
ज़माने को शक़्ल आईने में दिखाई है

महफ़िल में हंगामा क्यों बरपा हुआ है
यक़ीनन ग़ज़ल हक़ीक़त की सुनाई है

हैरान और परेशान हो गई है मौत भी
ज़िन्दगी ने मौत को दास्तान सुनाई है

दोज़ख़ भी शर्म से पानी-पानी हो गई
हालात जब से ज़माने के देख आई है

हक़ीक़त के सुबूतों ने ख़ुदक़ुशी करली
साज़िश से मुंसिफ़ ने सज़ायें सुनाई है

मौज़-मस्ती सातवें आसमान पर 'साथी'
जब-जब भी बचपन की याद आई है।

1. दोज़ख़ =नर्क, **2.** मुंसिफ़=न्यायाधीश

ऐसे कैसे चलेगा

माना कि बहुत हैं आपकी कतार में
ये नाचीज़ भी तो आपके इंतज़ार में

मग़रूर[1] न हो अपनी इस तक़्दीर पे
वक़्त नहीं है किसी के अख़्तियार[2] में

सिर्फ़ ख़ुशी की धुनें ही नहीं बजती
ग़मों की धुनें भी होती हैं सितार में

मिलने का नाम ही तो मुहब्बत नहीं
जुदाई और तन्हाई भी होती प्यार में

दिल की मान कर ख़ुशगवार रहोगे
वर्ना कब तक रहेंगे सुक़ूँ से फ़रार में

रस्सियाँ जल गई मगर बल न गया
क्या रखा अदावत[3] के इस ऐतबार[4] में

किस के ऐतबार पे शहीद हो 'साथी'
साथ में कौन दफ़्न होगा मज़ार में।

1. मग़रूर=घमण्ड **2.**अख़्तियार=नियन्त्रण
3. अदावत=दुश्मनी **4.** ऐतबार=विश्वास।

कहीं ऐसा तो नहीं

रोते हुये बच्चे को हँसाना इबादत[1] तो नहीं
यतीमखाने की रहगुज़र ज़ियारत[2] तो नहीं

मेरी ज़िन्दगी मेरे दिल का ही संविधान है
किसी के हुक्म की खाँप पंचायत तो नहीं

अपंग गोपियों के संग, अपंग बन नाचे कृष्ण
बन्दों[3] के लिये ख़ुदा की अक़ीदत[4] तो नहीं

अपने से हज़ार गुना को खींच ले जाती है
चींटियों की एकता में यह ताक़त तो नहीं

जो भी दोगे अपनी लड़की को ही तो दोगे
ख़यालातों में दहेज की तिज़ारत[5] तो नहीं

अपाहिज व बेबस ग़रीब माँ-बाप के लिये
जवाँ बेटे की मौत होना क़यामत तो नहीं

नज़र मिलाकर भी अनदेखा कर देना 'साथी'
उसके दिल में कहीं यह अदावत[6] तो नहीं।

1. इबादत=पूजा **2.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा **3.** बन्दों=भक्त
4. अक़ीदत=श्रद्धा **5.** तिज़ारत=व्यापार **6.** अदावत=दुश्मनी।

हम ऐसे क्यों नहीं

क्या हम क़ातिल तो नहीं दिमाग़ की अदालत में
हम मुन्सिफ़[1] क्यों नहीं होते दिल की शराफ़त में

मन माफ़िक तर्क देते अपने जुर्म छिपाने के लिए
हम जफ़ा के वकील तो नहीं ख़ुद की ज़मानत में

जो अल्फ़ाज़[2] दिल औ दिमाग़ पर असर कर गये
फिर तहरीर[3] करके क्या करोगे ख़तो-किताबत[4] में

साज़ो सामान सदियों का ख़बर पल भर की नहीं
इंसान पानी का बुलबुला, कब तक रहे सलामत में

कमाई जायज़ हो और दिल-दिमाग़ पाक़ साफ़ हो
फिर चैन व सुक़ून से इन्सान रहता है तिज़ारत[5] में

क़श्ती में तो छेद और बातें समन्दर पार करने की
सख़्त जुनून चाहिये दिल औ दिमाग़ से बग़ावत में

बेगुनाह को सज़ा दिलाकर, दिल के कटघरे में खड़ा
ख़ुदक़ुशी से कब तक बचेगा 'साथी' इस ज़लालत में।

1. मुन्सिफ़=न्यायाधीश **2.** अल्फ़ाज=शब्द **3.** तहरीर=लिखना
4. ख़तो-किताबत=पत्र और पुस्तक **5.** तिज़ारत=व्यापार

ऐसा क्यों है

आँखों में जो भी ख़ौफ़नाक मन्ज़र हैं
ज़माने के बनाये हुये तेज ख़न्ज़र हैं

जिसे अपना मानते हैं वो अपने नहीं
रिश्तों के गुलशन ऐसे क्यों बन्ज़र हैं

पड़ौसियों में भाईचारा इस तरह है कि
मानते एक दूसरे को साँप छछून्दर हैं

कोई भिखारी है तो कोई ज़मींदार है
इंसान-इंसान में ही कितना अन्तर है

मजनू को सज़ा तो तड़पती है लैला
दीवानों पर यह कैसा जादू मन्तर है

हौंसले की परवाज़[1] का वही हक़दार
जिसके दिल में जोश का कलन्दर है

ज़िन्दगी के तूफ़ान में वही कामयाब
ख़तरों के समन्दर में जो सिकन्दर है

मुसीबत में इन्सान की पहचान 'साथी'
कौन-कौन कैसे दोस्ती के अन्दर है।

1. परवाज़ =उड़ान

कभी ऐसा न करें

ख़्वाहिशों को जायज़ ही रहने दें
दिल को दिमाग़ से नहीं मरने दें

ज़बरदस्ती न हो ख़्वाबों-ख़याल से
जैसा चाहता है उसे वैसा बनने दें

हर गुल की अलग रंगत-फ़ितरत[1]
आबाद चमन में सबको खिलने दें

भाई चारे की लहराती हुई फ़सलें
नफ़रत के ख़न्ज़र से न कटने दें

बर्फ़ से ज़्यादा आब[2] की अहमीयत
मुहब्बत के समंदर को न जमने दें

बिलखते हुये ख़ौफ़ज़दा बच्चे को
ज़ेहाद की फ़साद में न जलने दें

नाजायज़ तमन्ना के लिए 'साथी'
गीले दरख़्त[3] को कभी न कटने दें।

1. फ़ितरत=स्वभाव **2.** आब=पानी **3.** दरख़्त=पेड़।

औरत की अहमीयत

औरत माँ बन कर ख़ुदा के और क़रीब होती है
कायनात[1] उसकी रहमतों से ख़ुशनसीब होती है

इल्म व हुनर से रोशन होते हैं घर औ परिवार
ग़र रहन और सहन में माँ की तहज़ीब होती है

हरेक रिश्ते की पैदाइश होती है ख़्वातीन[2] से ही
रिश्तों के ख़ज़ाने में फिर कैसे वो ग़रीब होती है

सबकी फ़रमाइश पूरी करने का ज़िम्मा उसका है
बिना औरत के परिवार की हालत अज़ीब होती है

ज़िन्दगानी के इन्द्रधनुष में हर रंग की अहमीयत
औरत के बिना सतरंगी दुनिया बदनसीब होती है

दर्द और ग़म सहने की फ़ितरत[3] और क़ैफ़ियत[4] से
'साथी' की साथी ग़म गुसार[5] व ज़हेनसीब[6] होती है।

1. कायनात=संसार **2.** ख़्वातीन=औरत **3.** फ़ितरत=आदत
4. क़ैफ़ियत= स्वभाव, **5.** ग़म गुसार=दुख हरना 6. ज़हेनसीब=भाग्यशाली

क्या ख़ूब है : एक

मेरा अंदाज़े बयाँ तो कुछ और है
ख़ामोशी में भी तूफ़ान का शौर है

पत्थर भी पिघल के पानी हो जाये
तसव्वुर में अगर इस तरह ज़ोर है

जो चुराले दिल का चैन व सुक़ून
असल में वो ही तो शातिर चोर है

बेसबब नाचता गाता है गली-गली
उसके मन में ही मस्ती का मोर[1] है

याद आते ही कृष्ण की बाँसुरी धुन
राधा की आँख़ों में घटा घनघोर है

अलसुबह उसने ख़ुदक़ुशी कर ली
बेक़ुसूर की आँख में रतजगी भौर[2] है

हक़ व ईमान के लिये भी इन्क़लाब
फ़ाँसी की सज़ा का ज़ालिम दौर है

जिसको जानवर भी नहीं खा सकते
ग़रीब के मुँह में ऐसा भी तो कोर है

जिसको जज़्बात का अहसास न हो
फिर वो तो ज़िन्दा मुर्दे जैसा ढोर[3] है

पापी पेट के सवाल और ज़वाब का
'साथी' कोई ओर है न कोई छोर है।

1. मोर=मयूर **2.** भौर=सुबह **3.** ढोर=जानवर।

क्या ख़ूब है : दो

हकीक़त यह कि ज़िन्दा रहना भी ख़्वाब है
दहशतग़र्दी में इन्सान कीमा और क़बाब है

बेहद मुश्क़िल है ज़िन्दा रहने के सवालात
ऐसी बेरहम ज़िन्दगी ज़लालत का हिसाब है

रसूख़ात की रहमतों से ना कुछ इन्सान को
सारे शहर का सुबह औ शाम को आदाब[1] है

जो पानी किसी की प्यास मिटा नहीं सका
फिर समंदर भी तो अपने आप में अज़ाब है

मग़रूर[2] रहता अपने इल्मो[3]-हुनर के अदब[4] में
क्या ख़जूर जैसा इंसान भी आली ज़नाब है

कितनी अज़ीब तक़्दीर है एक सुख़नवर[5] की
उसके हिस्से में ग़मों व अश्क़ों की शराब है

सिर्फ़ दरीचे[6] खुले हुये मक़ामे इन्सानियत के
बन्द दरवाजे पर खड़ा हुआ 'साथी' बेताब है।

1. अज़ाब= अभिशाप **2.** मग़रूर=घमण्डी **3.** इल्म=ज्ञान
4. अदब=साहित्य **5.** सुख़नवर=कवि **6.** दरीचे=झरोखे।

क्या ख़ूब है : तीन

बाप के कन्धे पे जवाँ बेटे का जनाज़ा है
ग़र्दीशे-तक़्दीर का बेरहम सा तमाशा है

बेटे की मौत का मिल जायेगा मुआवजा
फिर भी बूढ़े माँ-बाप के हाथ निराशा है

चाँदनी रात में क़हक़शा[1] व माहताब[2] नहीं
दिन में चाँद व तारे क्या ख़ूब नज़ारा है

पानी के दरमियाँ होकर भी प्यासा रहना
क्या ऐसे समन्दर का भी कोई सहारा है

नूरे-महफ़िल में भी आफ़ताब[3] उदास रहा
यक़ीनन अब्रों[4] की साज़िश का ज़माना है

आरक्षण के बीज से ज़मीन हो गई बंजर
फिर इल्मी किसानों का कहाँ ठिकाना है

मेहनत और ईमानदारी से जीने वाला ही
दुनिया के लिए तो वो आसान निशाना है

ख़्वाबों और ख़यालातों की हकीक़त 'साथी'
सपनों की बरात तो फ़क़त[5] एक हताशा है।

1. क़हक़शा=आकाश गंगा **2.** माहताब=चाँद
3. आफ़ताब=सूरज **4.** अब्र=बादल **5.** फ़क़त=सिर्फ़।

ऐसा तो हो नहीं जाता

आईने साफ़ करने से चेहरा बदल नहीं जाता
गंगा स्नान करने से तो पाप धुल नहीं जाता

सफेद कपड़ों में तो शर्मनाक नापाक़ करतूतें
ख़ुदा के दर जाने से इंसान बदल नहीं जाता

किसी को भी लाख समझाओ फायदे की बात
ठोकरें खाये बिना तो कोई सम्भल नहीं जाता

रोज़ नये चेहरे आते-जाते रहते हैं दिमाग़ में
दिल में जो बस चुका वो निकल नहीं जाता

इंसान ना कुछ बात पर ही ख़ुदक़ुशी कर लेते
मगर शैतान क़त्ल करके भी दहल नहीं जाता

जब तक अफ़सोस का लावा दिल में नहीं बहे
पत्थर दिल इंसान यूँ ही तो पिघल नहीं जाता

मज़बूरी इंसान को बेबस-लाचार बना देती है
दिली अरमान कोई ऐसे ही कुचल नहीं जाता

बिना आग के धुआँ कहाँ उठा करता है 'साथी'
ऐसे ही तो किसी पर दिल मचल नहीं जाता।

ऐसा भी होता है : एक

इन्सानियत नीलाम हो रही हैं रस्ते में
कोई भी तो ख़रीददार नहीं हैं सस्ते में

अम्न और चैन के मदरसे बन्द हो गये
नफ़रत व रंज़िश की क़िताबें हैं बस्ते में

जिसकी तलाश में रात भर परेशान रहे
वो ही महफूज़ मिले पुलिस के दस्ते में

ख़ुदग़र्ज़ साज़िशों के चक्रव्यूह में फँस कर
बेगुनाह लाल-पीला हो रहे हैं गुस्से में

एक शायर के पास दौलत के नाम पर
चंद क़िताबें मिली ख़स्ता हाल बक्से में

ऊँची दुकान में फीके पकवान की रंगत
जैसे सस्ते तोहफे मिले हो मंहगे गत्ते में

ताउम्र हमेशा वो बेचैन व परेशान रहेगा
जकड़ा रहा जो मोह-माया के रस्से में

ख़ुदग़र्ज़ और मतलबी दुनिया में 'साथी'
अपना कोई भी हमदर्द नहीं हैं रिश्ते में।

ऐसा भी होता है : दो

बच्चे जैसे-जैसे सयाने बनने लगते हैं
पुराने आशियाँ फिर उजड़ने लगते हैं

वक़्त जैसे ही बुरा आने लगता है तो
फिर ख़ास अपने भी बदलने लगते हैं

नाकुछ बादलों की साज़िश में शिकार
चाँद व सूरज भी मुँह छुपाने लगते हैं

बैचारे रहजन[1] तो वैसे ही बदनाम होते
मौक़ा पाकर रहबर[2] भी लूटने लगते हैं

शान औ शौक़त में नाजायज़ ख़्वाहिशें
गुनाहों की तरफ कदम बढ़ने लगते हैं

सही ग़लत के फ़ैसले कौन करे 'साथी'
सब ख़ुद को जायज़ समझने लगते है।

1. रहजन=लुटेरे 2. रहबर=मार्गदर्शक।

ऐसा ही होता रहेगा

रिश्तों की क़शिश से जब तक अंज़ान रहोगे
ख़ुशनुमा ज़िन्दगी से तब तक बेज़ान रहोगे

इंसानी शख़्सियत में जब तक न हो इज़ाफ़ा
दौलत होने के बावजूद कहाँ धनवान रहोगे

दिमाग़ में कुछ कर गुज़रने की तमन्नाओं से
फिर तो ताउम्र हमेशा दिल से जवान रहोगे

कोई यूँ ही दूसरों पर मेहरबान नहीं होता है
उसकी साज़िशों से कब तक नादान रहोगे

जब कर लिया सौदा अपनी बहन-बेटी का
फिर उसकी नज़रों में तो एक शैतान रहोगे

माना कि बेहद ज़रूरी होता दोनों के लिए
मगर ज़बरदस्ती के वक़्त तो हैवान रहोगे

भूखे को रोटी व प्यासे को पानी पीला कर
ज़रूरतमंद के लिए तो फिर भगवान रहोगे

कम से कम कुछ तो ऐसा काम करो 'साथी'
ख़ुद अपने आपसे कब तक बेईमान रहोगे।

इन्सानी फ़ितरत

पण्डित, मुल्ला और पादरी ख़ुदा के दलाल है
मज़हब इनके क़ातिल हाथों से ही हलाल है

मनमाफ़िक तर्क़ देते हैं अपने मुनाफ़े के लिए
इन्सानियत इनकी ख़ुदग़र्ज़ी में तो बेहाल है

लाचार, बेबस और यतीमों का मददगार नहीं
यक़ीनन वही दौलतमन्द दिल से कंगाल है

औरत के बिना औरत पर सितम नामुमक़िन
ख़्वातीन[1] की चीख़ों में बस एक ही सवाल है

सिर्फ़ वादे औ इरादों से ही अवाम ख़ुशहाल
सियासतदारों का क्या ख़ूब हसीन कमाल है

कुछ इंसान जानवरों की मुताबिक हो रहे हैं
जानवरों को इस बात पर हो रहा मलाल है

सितमग़र[2] खोया-खोया, उदास डरा हुआ है
शराफ़त औ वफ़ाओं का क्या ख़ूब धमाल है

आबाद है हर तरफ नफ़रतों का दश्त[3] 'साथी'
मुहब्बत के गुलशन तो सहरा[4] से बदहाल है।

1. ख़्वातीन=औरत **2.** सितमग़र=जुल्म करने वाला **3.** दश्त =जंगल **4.** सहरा =रेगिस्तान।

क्या ख़ूब देते हैं

जो मेरे दिली ज़ख्मों को हवा देते हैं
वही ख़याल मेरे दिल को दवा देते हैं

मेरे लिए ही जो बेचैन रहते है हमेशा
वही तो मेरी तरक़्क़ी की दुआ देते हैं

जिनका ख़याल रहता है सबसे ज़्यादा
वो ही तसव्वुर दिमाग़ को सज़ा देते हैं

कुछ न कह कर बहुत कुछ कह देना
वो ही अशआर[1] ग़ज़ल का मज़ा देते हैं

जो आज ज़िंदा हैं वो कल नहीं रहेगा
ज़िन्दगी औ मौत का फलसफ़ा[2] देते हैं

ज़िन्दगी जब मौत से बदतर हो जाये
जब ख़ास मेरे अपने ही जफ़ा देते हैं

वही ज़िन्दा रहते हैं दिल व दिमाग़ में
वास्ते फ़र्ज़ जो अपने सर कटा देते हैं

मिटा कर अपनी जर्ज़र बस्तियाँ 'साथी'
ग़रीब, अमीर के महल को वफ़ा देते हैं।

1. अशआर=ग़ज़ल का शेर **2.** फलसफ़ा =चिन्तन।

क्या-क्या हो रहे हैं

बेहद अफ़सोस है कि ख़त्म कुछ जानवर हो रहे हैं
मगर मलाल नहीं है कुछ इंसान जानवर हो रहे हैं

अब कैसे क़ुदरत बाकी बचेगी क़ुदरत होने के लिए
जब से हम बदन इन्सान ही हम बिस्तर हो रहे हैं

क़िस्मत की मेहरबानी से ना कुछ बरसाती नदियाँ
आब[1] ही ज़िन्दगी है मगर तूफ़ान से क़हर हो रहे हैं

रोजी व रोटी का मसला इतना ज़ालिम नहीं है कि
फिर सूखे जंगल में तब्दील हरे-भरे शजर[2] हो रहे हैं

जिनकी हैसियत नहीं होती चंद बूंदें पानी रखने की
फिर नाकुछ सूखे सहरा[3] भी तूफानी समंदर हो रहे हैं

सारे ज़माने में जग जाहिर है उनकी नापाक़ करतूतें
मगर बिना सुबूत औ गवाह के वो बेक़ुसूर हो रहे हैं

वैसे ही बहुत मुश्क़िल है दिलों से दिलों का मिलना
ज़माने के ज़ुल्मो-सितम से दीवाने मज़बूर हो रहे हैं

तहज़ीब औ रिवायत[4] से ही घर-परिवार रोशन 'साथी'
आजकल के बच्चे माँ-बाप के लिए ख़ंज़र हो रहे हैं।

1. आब=पानी **2.** शजर=पेड़ **3.** सहरा=रेगिस्तान **4.** रिवायत=परम्परा।

इस तरह तो ना किया जाये

किसी को भी इस तरह से मज़बूर ना किया जाये
नीलाम सरे राह में उसका सिन्दूर ना किया जाये

साज़िशों के तहत बेबुनियाद सुबूत और ग़वाहों से
हरे-भरे नीम के दरख़्त[1] को खजूर ना किया जाये

मुहब्बत है तो उसकी क़शिश की तासीर भी होगी
तो इम्तहान लेकर प्यार को नासूर ना किया जाये

सबको अपने जुर्मों और गुनाहों का हिसाब देना है
बेबसी में किसी को बन्धुआ मजदूर ना किया जाये

पौधा ही एक दिन विशाल और घना शजर[2] बनेगा
बच्चा समझ, गुनाहगार को बेक़ुसूर ना किया जाये

वक़्त ने राजाओं को भी भिखारी बनते हुए देखा है
दौलत के नशे में ख़ुद को मगरूर ना किया जाये

गुलों[3] को मसल कर इत्र बना देना तो बेरहमी है
ज़बरदस्ती को जवानी का सरूर ना किया जाये

जो ज़ुबान न कह सकी वही राज़े-मुहब्बत 'साथी'
इज़हार[4] करके मुहब्बत को क़ाफ़ूर[5] ना किया जाये।

1. दरख़्त=पेड़, **2.** शजर=पेड़ **3.** गुल=फूल **4.** इज़हार=प्रकट करना **5.** क़ाफ़ूर=नष्ट करना

ऐसा क्यों होता है

जादू टोना करने से कब क़िस्मत बदलती है
बलायें जब आती है तो हौसलों से टलती है

जब तलवार सिर्फ़ अपने सर पर लटकती है
फिर अपने दिल की धड़कन भी खटकती है

इश्क़ जब इबादत[1] के बराबर हो जाता है तो
दीवानों को उल्फ़त[2] फिर तो ख़ुदाई लगती है

सिर्फ अपने मतलब से ही मतलब रखा करो
यही बात तो हम सबको बहुत बुरी लगती है

मौजूदगी का अहसास कराती है नींव की ईंट
तो इमारत के कगूंरों को यह बात अखरती है

लाख समझाओ किसी को भी फ़ायदे की बात
ठोकर खाये बिना दुनिया कहाँ से सम्भलती है

उसके दिलो दिमाग़ ने क्या कुछ न सहा होगा
बिना वजह तो ज़ीस्त[3] ख़ुदक़ुशी नहीं करती है

बहुत आसान है सीने पर पत्थर रखना 'साथी'
इंसानियत जब से पत्थर की मूरत सँवरती है।

1. इबादत=पूजा **2.** उल्फ़त=प्यार **3.** ज़ीस्त=ज़िन्दगी।

क्या-क्या देखना है

मेरी पीठ पे ख़ँज़र उसका निशाना है
सीने से दोस्ताना रिश्ते को निभाना है

वो मुझ से हार मान चुका है अकेले में
सबके सामने उसको मुझसे जिताना है

रक़ीब[1] न कर सका वो रफ़ीक़[2] ने किया
ऐसे दोस्त के साथ ज़िन्दगी बिताना है

जो गिर गया है ख़ुद अपनी नज़रों में
फिर ज़माने में उसको क्या गिराना है

जिसने अपने हाथों से ख़ुदकुशी की हो
अब उसे और किस तरह से मिटाना है

शराफ़त के काँटों से उसके पैर ज़ख़्मी
मौत की सज़ा लिए कालीन बिछाना है

राहे वफ़ा में दर-दर की ठोकरे मिली
फुटपाथ पर ही अब उसका ठिकाना है

जब बेगुनाह को सज़ा होतो गई 'साथी'
फिर साज़िशों के क्या सुबूत दिखाना है।

1. रक़ीब=दुश्मन **2.** रफ़ीक=दोस्त।

ऐसा क्यों होना है

मज़बूरी में ये अक़्लमन्दी दिखाना है
बुरे हालात को भी अच्छा बताना है

उसके बदन पर कपड़े तक भी नहीं
तो फुटपाथ पे फिर क्या बिछाना है

जो कर रहा है सबसे दुआ सलाम
गैर की शादी में बेग़ाना[1] दीवाना है

हर कोई चाहता है ख़ुशी से रहना
फिर क्यों ग़मगीन सारा ज़माना है

ख़ाक[2] में मिलाने का इन्तज़ाम नहीं
उसका देहदान तो सिर्फ़ बहाना है

बेग़ुनाह को जब सज़ा होतो गई है
मुन्सिफ़[3] को क्या सुबूत समझाना है

ज़िन्दगी शर्म से पानी-पानी हो तो
और किस तरह ख़ुद को मिटाना है

जो आशना[4] है सारे जमाने में 'साथी'
वो अपने आपके लिये ही बेग़ाना है।

1. बेग़ाना=अपरिचित **2.** ख़ाक=मिट्टी **3.** मुन्सिफ़=न्यायाधीश **4.** आशना=परिचित।

ऐसा होना चाहिये

जिसे अपने लिये कुछ भी नहीं चाहिये
उसके साथ ही अपना याराना बनाइये

लेने के बजाय देने से इज़्ज़त मिलेगी
फिर क्यों नहीं दोनों हाथों से लुटाइये

जिनकी हरक़तें जानवरों से भी बदतर
ऐसे इंसान से तो फिर दूरियाँ बढ़ाइये

जितनी भूख लगती उतना ही खाता है
इन्सान को जानवर से सीखना चाहिये

जिसने मुँह दिया है वही दाना भी देगा
ख़ुदा के इन्तज़ाम का शुक्रिया जताइये

गुनाह से नफ़रत करो गुनहगार से नहीं
उसको इन्सान बनाने के कदम उठाइये

सबका ख़ून तो एक ही रंग का होता है
दहशतग़र्द को इतना इल्म होना चाहिये

जो किसी का भी हमराज़ नहीं है 'साथी'
उसे ही अपने राज़ का हमसफ़र बनाइये।

हाय क्या मज़बूरी है

रूठे हुये को मनाना एक कलाकारी है
बहस के वक़्त चुप रहना समझदारी है

मुलाक़ात से पहले तो बेहद बेक़रारी है
जुदाई का वक़्त क़यामत[1] से भी भारी है

कहीं रुसवा[2] न हो जाये हमारी मुहब्बत
मुलाक़ात के वक़्त तो बेबस लाचारी है

कहाँ ज़रूरत है सुबूतों और गवाहों की
याद में बहते हुये अश्क़ ही वफ़ादारी है

इश्क़ के हसीं उम्रदराज़[3] होने के लिये
एतबार[4] और इरादे ही तो तीमारदारी है

मुहब्बत निभाना जब मज़बूरी हो जाये
तो रिश्ते में क़शिश कहाँ असरदारी है

एक दूसरे की बाँहों में ही निकले दम
दोनों की इश्क़ के लिये ईमानदारी है

मुहब्बत आबाद और महफूज़ रहे 'साथी'
यह तो हम दोनों की ही ज़वाबदारी है।

1. क़यामत=आख़िरी दिन **2.** रुसवा=बदनाम **3.** उम्रदराज़=लम्बी आयु,
4. एतबार=विश्वास **5.** तीमारदारी=सेवा।

क्या-क्या नहीं था

उसके देहदान का ज़माने में सम्मान नहीं था
सुपुर्दे-ख़ाक[1] का उसके पास सामान नहीं था

मतलबी दुनिया में अपने सभी पराये हो गये
बदहाली में उसके घर कोई मेहमान नहीं था

सुनसान मकान में भी रातों को महफूज़ रहा
उसके जर्ज़र मकान में कोई सामान नहीं था

बज़्मे-सुख़न[2] में मुद्दत से उसकी शिरक़त नहीं
बज़्मे-अदब[3] उसके हालात से अंज़ान नहीं था

मेहनतक़श लगाता रहा ख़ुशहाली की फसलें
मगर अफ़सोस वो खुदग़र्ज़ किसान नहीं था

ऐश और आराम के लिये कोठियाँ बनती रही
इमारतों पर ईमान का नामो-निशान नहीं था

भूख व प्यास से फुटपाथ पर दम तोड़ दिया
इन्सानियत के लिये क्या वो इन्सान नहीं था

बेगुनाह ने शर्म से ख़ुदक़ुशी कर तो ली 'साथी'
गवाह और मुन्सिफ़[4] का कोई ईमान नहीं था।

1. सुपुर्दे-ख़ाक=अन्तिम संस्कार **2.** बज़्मे-सुख़न=काव्य गोष्ठी
3. बज़्मे-अदब=साहित्य जगत **4.** मुन्सिफ़ =न्यायाधीश।

औरत का दर्द

कहीं अत्याचार होता कहीं बलात्कार
औरत इन सबसे होती बहुत लाचार

बेबस और मज़बूरी में बनती शिकार
हम सब है उसकी मौत के ज़िम्मेदार

ऐतबार से होती हैरान और परेशान
बिक जाती जब अस्मत बीच बाज़ार

सब कुछ छोड़कर अपनाती ससुराल
फिर भी चलता दहेज का कारोबार

जो रक्षक है वो ही भक्षक बन जाये
तब विश्वास के रिश्ते होते शर्मसार

किसी से कम नहीं जोशो जुनून में
फिर भी रिवायतों से होती है बेकार

हँसकर सहती सारे जुल्म व सितम
फिर भी पेट काटके पालती परिवार

सभी की ज़रूरतों को पूरा करने में
फिर ख़ुद ही से हो जाती है बेज़ार[1]

दुश्मन है वो अपने घर-परिवार का
'साथी' जो मारता है ममता औ प्यार।

1. बेज़ार = उदास

हालात-ए-वतन

अवाम लेकर खड़ी होती है ख़न्ज़र और भाले
फिर बादशाहों को भी पड़ते है जान के लाले

कमाई कुछ नहीं सिर्फ़ दौलत लुटाते रहना है
फिर तो कुबेर के यहाँ भी लग जाते है ताले

जिनको कुछ कर गुज़रने का रहता हो जुनून
वह तो नहीं देखते हैं हाथ और पाँव के छाले

अपनी काली कमाई के चन्द सिक्के लुटाकर
मज़हब के नाम पे रहम करते हैं दौलत वाले

बेगुनाह जब साज़िश का शिकार होता रहता
तब कहाँ चले जाते सारे के सारे ज़ेहन वाले

कुछ तो दीन और ईमान हो मुहब्बत के लिये
क्या हमेशा सज़ा पाते रहेंगे प्यार करने वाले

सियासत और मज़हब के शतरंजी मोहरों से
अक़्सर इन्सान ही मरते रहते हैं भोले-भाले

सियासत कुछ तो फ़र्ज और ईमान पूरा करे
कब तक शहीद होते रहेंगे वतन के रखवाले

क्या भूख इतनी बेरहम और ज़ालिम है 'साथी'
फुटपाथ पे जाकर देखना भिखारी के निवाले।

1. अवाम=जनता **2.** ज़ेहन=दिमाग **3.** सियासत=राजनीति।

कैसा लगता है

ज़माने की नज़र में सुहागन रहकर कैसा लगता है
जवान सूनी माँग में सिन्दूर भरकर कैसा लगता है

अपने ख़्वाबों और ख़यालों से समझौता गुनाह है तो
बेबस दिल व दिमाग़ को कुचलकर कैसा लगता है

मुज़रिम भी ज़लालत महसूस करता है क़ैदखाने में
बेगुनाह को संगीन मुज़रिम बनकर कैसा लगता है

जिसके लिये खो चुका कई बार अपनों का ऐतबार[1]
उसके मुँह से बेवफ़ा लफ़्ज सुनकर कैसा लगता है

उसको अहसास नहीं होता मेरे दिली जज़्बातों का
फिर मेरे नादान दिल को मचलकर कैसा लगता है

जब तक़्दीर ही बयान होती है हाथों की लकीरों से
फिर बिना हाथ का अपाहिज़ होकर कैसा लगता है

शर्म से पानी-पानी हो जाती है कायनात[2] भी 'साथी'
इंसान को हैवान औ शैतान देखकर कैसा लगता है।

1. ऐतबार=विश्वास **2.** कायनात=संसार।

ज़माने की रिवायतें[1]

एहतराम[2] का पैमाना भी क्या ख़ूब निराला है
जिसके पास दौलत उसके गले में माला है

दौलत ख़ुदा नहीं पर ख़ुदा से कम भी नहीं
ज़माने में इस फलसफ़े[3] का ही बोलबाला है

मोह माया के जाल में हर कोई तो बदहाल
जो दुनियादारी से बेख़बर वो ही मतवाला है

जिसने ज़माने के लिये ज़हरे ज़फ़ा पी लिया
फिर उसका दिल और दिमाग़ ही शिवाला है

अय्याशियों में पानी की तरह बहा रहे दौलत
ख़याल आता कि ग़रीब के मुँह में निवाला है

ज़ुल्म और सितम की इन्तहा एक दिन होगी
बद्दुआओं से निकली आह जब से ज्वाला है

छुप जाता है जंगल का राजा अपनी गुफा में
जब अदने से चूहों के हाथ में आता भाला है

सिर्फ़ दौलत लुटाना है कमाना कुछ भी नहीं
फिर तो कुबेर के ख़जाने का भी दिवाला है

बेगुनाह ने हँस कर के जुर्म क़ुबूल कर लिये
फिर सुबूतों और ग़वाहों से क़ानून काला है

ईमान से चराग़ से चराग़ ज़लाते रहें 'साथी'
तो नूरे-चराग़[4] में आफ़ताब[5] जैसा उजाला है।

1. रिवायत=परम्परा **2.** एहतराम=सम्मान **3.** फलसफ़ा=चिन्तन
4. नूरे-चराग़=दीपक का प्रकाश **5.** आफ़ताब=सूरज।

शराफ़त का फलसफ़ा[1]

कौन ग़र्दिश में उसके संग चलेगा
जो सिर्फ़ अपने बारे में ही सोचेगा

जो पाक़[2] दिल शख़्सियत से रहेगा
वही सबके सामने ही सच बोलेगा

चालाक और बेईमान ही चुप रहेगा
सच्चा इन्सान तो गुस्सा ही करेगा

ज़लील होकर भी जो ज़िंदा रहता
इज़्जत व एतराम[3] से कैसे जीयेगा

शराफ़त से ज़िन्दगी जीने वाला ही
ईमान व वफ़ा के ख़न्ज़र से मरेगा

ख़ुदग़र्ज़ व मतलबी ही इन्सान तो
अपनों की नज़र में शर्म से गिरेगा

लाख जतन कर ले ज़ालिम ज़माना
दरवेश[4] तो इबादत[5] में ज़रुर नाचेगा

इंसानियत की क़द्र करने वाला ही
मुहब्बत की अगन से जरूर जलेगा

दीन व ईमान से जीने वाला 'साथी'
इज़्जत औ आबरू से ही तो मरेगा।

1. फलसफ़ा=चिन्तन **2.** पाक़=पवित्र
3. एतराम=सम्मान, **4.** दरवेश=फक़ीर **5.** इबादत=पूजा।

समझदारी

वह शक़ और शिक़ायत का शिकार है
दिल और दिमाग़ से वही तो बीमार है

गिले व शिक़वे से कहाँ ज़िंदा प्यार है
मुहब्बत में तो सिर्फ़ व सिर्फ़ ऐतबार है

तू-तू, मैं-मैं, से कुछ भी नहीं हासिल
बहस में जो चुप रहे वही समझदार है

जो ग़लतफहमी और कान का कच्चा है
उसके मन में तो नफ़रतों का बुख़ार है

जो मुँह पर बयान कर देता है सब कुछ
वह शख़्स ही तो रिश्तों में ईमानदार है

जो यह कहे कि सारी भूमि गोपाल की
वो हज़ार बीघा का मालिक ज़मींदार है

जो अहसास औ जज़्बात की क़द्र करेगा
वही तो रिश्ते के लिये सिर्फ़ वफ़ादार है

मौत क्यों नहीं आ जाती है तुझे 'साथी'
बिना महबूब के यह ज़िन्दगानी बेकार है।

जब ऐसा होता है तो

मगरूर[1] होकर जब भी क़तरा समंदर हो जाता है
फिर वह दरिया के वजूद से बेख़बर हो जाता है

अपने घर के लिये ज़हर और ख़ंज़र हो जाता है
जो घर औ परिवार के लिये अफ़सर हो जाता है

सितमग़र मोम की तरह से पिघलकर हो जाता है
प्यार और मुहब्बत में ऐसा ज़ादू मंतर हो जाता है

जो ख़ुद की नज़र में औरों से बेहतर हो जाता है
दूसरे के दिल और दिमाग़ में क़मतर[2] हो जाता है

ज़माने से कुछ भी नहीं लेकर बहुत कुछ देने वाला
ज़माने के लिये वो इन्सान फिर शजर[3] हो जाता है

ग़रीब और कमजोर तबके को कमजोर मत समझो
प्यासे को चन्द बून्दें अमृत जैसा नीर[4] हो जाता है

वफ़ा और ऐतबार के अहसासों के रंगों में रंग कर
मन से सूनी माँग में सुहाग का सिंदूर हो जाता है

माथे पर हल्दी, रोली व चन्दन के तिलक से 'साथी'
दाग़दार इन्सानों का भी अच्छा असर हो जाता है।

1. मगरूर=घमण्डी **2.** क़मतर=बिना काम का **3.** शजर=पेड़ **4.** नीर=पानी।

रिश्तों की फ़ितरत

बेगुनाह की चीख ज़ालिम को बदहाल कर देगी
बेक़ुसूर की दुआ सितमग़र को मलाल कर देगी

समंदर का चुल्लू भर पानी में डूबकर मर जाना
समन्दर के दिल औ दिमाग़ में सवाल कर देगी

जर्रे-जर्रे[1] का वजूद और अहमीयत है कायनात[2] में
चराग़ों की रोशनी आफ़ताब[3] सा जमाल[4] कर देगी

अपने महबूब के हाथों से ज़हर का प्याला पीकर
महबूबा मुहब्बत को ऐसी हसीन मिसाल कर देगी

अपनी मुहब्बत के लिये इन्सानियत का क़त्ल कर
पाक़ दामन इश्क़ को इस तरह से हलाल कर देगी

इंक़लाब की चिंगारी एक दिन ज़रूर लावा बनेगी
ज़ुल्मो-सितम की इन्तहा एक दिन बवाल कर देगी

रिश्ते की फ़ितरत[5] शजर[6] की तरह से होनी चाहिये
हरे शजर को काटना इंसान को कंगाल कर देगी

'साथी'अगर रिश्तों में तिज़ारत[7] का फलसफ़ा[8] होतो
ऐसी ख़ुदग़र्ज़ ज़िन्दगी इन्सान को दलाल कर देगी।

1. जर्रे-जर्रे=कंण कंण **2.** कायनात=संसार **3.** आफ़ताब=सूरज **4.** जमाल=प्रकाश
5. फ़ितरत=सोच, **6.** शजर=पेड़ **7.** तिज़ारत=व्यापार **8.** फलसफ़ा=चिन्तन।

हिन्दुस्तान की शख़्सियत

महफ़ूज़ सबके जहाँ पर मज़हब और ईमान है
कायनात में ऐसा मुल्क़ तो सिर्फ़ हिन्दुस्तान है

इन मज़हबी किताबों में इन्सानियत भगवान है
फिर चाहे क्यों न बाईबिल, गीता और कुरान है

यह मुल्क़ किसी एक की तो ज़ागीर नहीं यारों
सबको ख़ुशहाली से रहने के लिये संविधान है

जो भी आया हिन्दुस्ताँ का होकर ही रह गया
इसलिये यहाँ की तहज़ीब पर हमें इत्मीनान है

जिसने भी माना है हिन्दुस्तान को अपना वतन
सिकन्दर और अकबर इसलिये ही तो महान है

तानाशाही अब तो गुज़रे हुये ज़माने की बात है
अब आम आदमी के पास मतदान की ज़ुबान है

हर हाल में इन्सान का ख़ून लाल रंग ही होगा
भले ही वह सिख, हिन्दू, ईसाई और मुसलमान है

'साथी' चाँद औ सूरज का नूर सबके लिये होगा
ईद और दिपावली के भाईचारे से सब समान है।

बेरहम इन्सानियत

बेगुनाह के इल्ज़ामे-क़त्ल से कैसे बरी हो पाओगे
बिका हुआ अपने जैसा गवाह कहाँ से ला पाओगे

अपनों में गैर और गैरों में अपने ही नज़र आते हैं
दिल और दिमाग़ को परेशान और लाचार पाओगे

अहसास होगा जब मेरी वफ़ाओं और ख़ुद्दारी का
शर्मसार होकर गले में फ़ाँसी का फन्दा ही पाओगे

जुगनू तो चमकेगें अपनी क़ाबिलियत और हुनर से
साज़िशों की आँधियों से कहाँ कामयाब हो पाओगे

कितने चराग़ जलाओगे सूरज को मिटाने के लिए
पहाड़ को तिनके की हिज़ाब[1] में कैसे छुपा पाओगे

लाठिया पीटने से तो अन्धेरा उजाला नहीं होता है
बारात की घोड़ियों से कैसे जंग को जीता पाओगे

उसको क्या दूँ जिसने दुआ मे मेरी ज़िन्दगी मांगी
ऐसी पाक़ और मुक़द्स[2] दुआयें कहाँ से ला पाओगे

भिखारी खड़ा है दरवाजे पर 'साथी' भूखा औ प्यासा
बेरहम हो कर हलक़ से खाना कैसे उतार पाओगे।

1. हिज़ाब=आड़ **2.** मुक़द्स=पुण्य

यह कैसी होली

चारों तरफ जल रही है इंसानियत की होली
हैवानों व शैतानों के संग, मैं कैसे खेलूँ होली

रोज लूट रही है सुहागन के सिंदूर की रोली
हैवानीयत के हादसों के संग कैसे खेलूँ होली

दहेज की चिताओं पे रोज़ जल रही है डोली
मासूम बेटियों को फिर कैसे बोलूँ 'हैप्पी' होली

दिल व दिमाग़ में नफ़रत और सूरत है भोली
शराफ़त के सच्चे रंगों से, मैं कैसे खेलूँ होली

विरह की अगन में जल रहा है मेरा हमजोली
बेबस औ बेक़रार होकर फिर कैसे खेलूँ होली

सरहद पर जवानों के ख़ून से लहूलुहान गोली
सैनिक के ग़मज़दा परिवार से कैसे खेलूँ होली

तन और मन पर नहीं है मौज़ मस्ती की चोली
ज़िन्दा लाशों के संग, मैं किस तरह खेलूँ होली

दाने-दाने को मोहताज़ है आम आदमी की झोली
उत्साह और उमंग से किस के साथ खेलूँ होली

रक्त रंज़ित है भाईचारे और मज़हब की टोली
दीपावली व ईद मिलन के संग कैसे खेलूँ होली

बरसात और सर्द रातों में सिरों पर नहीं है खोली
फुटपाथ पे सोते इन्सानों के संग कैसे खेलूँ होली

ज़ुबानों पर नहीं है हमदर्दी और प्यार की बोली
'साथी'अपनेपन से फिर किसके संग खेलूँ होली।

मुमक़िन नामुमक़िन

जिनको नहीं हो ख़ुद अपने पर ऐतबार
ख़ुदा के दर पे लगी है उनकी क़तार

ज़िन्दगी में ख़्वाहिशों के ऐसे हैं संसार
ग़रीबों के ख़्वाबों में जैसे घर-परिवार

इन्सान ख़ुशी से ऐसे वंचित व लाचार
जितना मृग कस्तूरी को होता बेक़रार

कचरे पात्र में रहता सच का समाचार
बाज़ार में बिकता है झूठ का अख़बार

बर्फ़ पिघल कर प्यास का है तीमारदार
फिर पानी क्यूँ हो जाता है क़ुसूरवार

पूनम की चाँदनी रातों में घना अंधेरा
क्या कोई इतना ज़्यादा होगा लाचार

समन्दर दो बून्द पानी को तरस जाये
ऐसी हकीक़तें हर पल होती हैं साकार

आग पानी-पानी होकर होती शर्मसार
'साथी' बेक़ुसूर जब भी होता गुनहगार।

हकीक़त : एक

बेगुनाह, गवाहों व सुबूतों से शर्मसार है
अन्धे क़ानून में तो इंसाफ़ गुनहगार है

जिसने भी पार कर दी लक्ष्मण रेखायें
उनकी आबरू फिर कैसे इज़्जतदार है

आम को तो नसीब नहीं खाने में आम
अमीरों को स्वाद में आम का अचार है

कुछ दिनों में जीवन बेकार हो जायेगा
अगर जेब में नहीं एक कार्ड आधार है

सबके सब पाग़ल एक दूसरे के लिये
जबकि हर कोई यहाँ पर समझदार है

सच के काढ़े से ही निरोगी है जीवन
झूठ की मिठास से ज़िन्दगी बीमार है

'साथी' बिना आग के धुआँ नहीं उठता
और अफ़वाहों की आँधियाँ बेशुमार है।

हकीक़त : दो

जिनके तन पर तो कमीज़[1] नहीं हैं
रिश्तों में किसी के अज़ीज़ नहीं हैं

तन ही जिनकी इज़्जत औ आबरू
उन के तन पर तो समीज़[2] नहीं हैं

भूख और प्यास की बेबस गुज़ारिश
तन-मन बेचकर भी कनीज़[3] नहीं हैं

मज़बूर की जान लेवा चीख-पुकार
उसे ज़ुल्म सहने की तमीज़ नहीं हैं

ये दौलत का ही असर है ज़माने में
दौलतमंद बज़्म[4] में बदतमीज़ नहीं हैं

जिन को सूखी रोटी भी नसीब नहीं
फिर कोई भी उनको लजीज़[5] नहीं हैं

गरीब औ मेहनतक़श है तो क्या हुआ
'साथी' क्या यह औरतें 'लेडीज़' नहीं हैं।

1. कमीज़=शर्ट **2.** समीज़=बनियान **3.** कनीज़=नौकर **4.** बज़्म=महफ़िल **5.** लजीज़=स्वादिष्ट।

पानी जैसे इन्सान

शीतलता, निर्मलता व पवित्रता से सब को प्यार है
पानी जैसे जीवन में सावन व बसंत की बहार है

पानी भाप बन कर फिर से पानी का आधार है
पानी के जैसा इंसान ही तो मन में यादगार है

पानी के बिना तो क़ुदरत का कोई वजूद नहीं
पानी में ही तीन चौथाई प्राणियों का संसार है

पानी में कोई भी हिस्सा हर हाल में नामुमक़िन
पानी में न कोई सरहद और न कोई दीवार है

भाईचारे व दोस्ती के रिश्तों में पानी की सीख
हर रंग में घुलकर मिलनसार और मददगार है

पानी किसी से कुछ चाहता नहीं सिर्फ़ देता है
ऐसी ज़िम्मेदारियों से सबके लिये ज़वाबदार है

किसी की भूख और प्यास में फर्क किये बिना
हर मज़हब में पानी मान-सम्मान का विचार है

पानी वक़्त पे बर्फ़ व बर्फ़ से पानी हो जाता है
पानी जैसे इन्सान हर हालात में सदा बहार है

पानी के बिना तो ज़िन्दगी मुमक़िन नहीं होती
पानी जैसा बनकर ही 'साथी' ऐसा असरदार है।

ख़ुशहाल ज़िन्दगी

शख़्सियत के नूर को इतना चमन करो
अपनी कथनी औ करनी को नग्न करो

कामयाबी एक दिन ज़रूर मिल जायेगी
ख़्वाबों को मुक़्मिल[1] करने में मगन करो

रिश्ते प्यार की मिठास से आबाद रहेंगे
अमीरी-ग़रीबी के सवाल को दफ़्न करो

गिला, शिक़वा औ शक़ ख़त्म हो जायेंगे
एक दूजे को समझने के तो प्रयत्न करो

बुरे-वक़्त का अहसास कभी नहीं होगा
उम्मीद व कोशिश के साथ चलन करो

नामुमक़िन भी तो मुमक़िन हो जाता है
दिल से कुछ भी करने का जतन करो

वफ़ा व ऐतबार से ख़ुश रहेगी ज़िन्दगी
'साथी' ख़ुदग़र्ज़ अना[2] को तो दमन करो।

1. मुक़्मिल=पूर्ण **2.** अना=अहम।

अज़ाब[1]-ए-ज़िन्दगी

जो दिलों में यादगार न हो ऐसे मरना नहीं
बद्दुआओं से रोज मर-मर कर जीना नहीं

ज़माने को मुँह दिखाने के लायक़ नहीं रहो
दीवानगी में ऐसी ग़लती हर्गिज़ करना नहीं

अपनी शख़्सियत को नूरे-फ़लक़[2] किये बिना
पाँव तले ज़मीन को आसमान समझना नहीं

अमीर हो कर ग़रीब बनकर फ़रियाद करना
ख़ुदा को तिज़ारत के तराजू में तौलना नहीं

सिर्फ़ नज़रों को हसीन व सुंदर अहसास हो
दिली सुक़ून न मिले ऐसा इंसान बनना नहीं

सख़्त पत्थरों के भी टुकड़े हो जाया करते हैं
अपने दिल और दिमाग़ को ऐसे बदलना नहीं

चैन औ सुक़ून से अपनी रात गुज़ार न सको
ऐसी फ़ितरत[3] औ कैफ़ियत[4] में तो ढलना नहीं

मेहनत की रोजी-रोटी ही दीन और ईमान है
क़र्ज़ और गुनाहों के दल-दल में फँसना नहीं

'साथी' अहसान जताने से सवाब[5] नहीं मिलता
ऐसे मदद करके फिर दरिया[6] में डालना नहीं।

1. अज़ाब=अभिशाप **2.** नूरे फ़लक=आसमान की रोशनी **3.** फ़ितरत=आदत
4. कैफ़ियत=स्वभाव **5.** सवाब=पुण्य **6.** दरिया=नदी।

माँ की महानता

माँ न तो हिंदू है और न मुसलमान है
माँ तो सिर्फ़ व सिर्फ़ एक हिंदुस्तान है

संसार पर माँ के इतने अहसान है कि
भगवान के लिये भी तो माँ भगवान है

किसी भी मज़हब में फ़र्क समझे बिना
माँ के आँचल में ममता दीनो-ईमान है

कैसी भी मन्नतें और मुरादें क्यों न हो
माँ के दामन में जन्नत जैसा जहान है

अपने सच होते सपने को दफ़्न कर के
माँ घर व परिवार के लिये आसमान है

गीता व कुरान की अपनी अहमीयत है
मगर माँ तहज़ीबों के लिये संविधान है

भूख-प्यास, अमीर की हो या ग़रीब की
माँ की रोटी औ पानी में सब समान है

कुछ के बदले कायनात को सब देकर
माँ के फलसफ़े में शजर के अरमान है

माँ बिना रिश्तों के वजूद नामुमक़िन है
ख़ुशहाल संसार के लिये माँ वरदान है

वफ़ा, दीनो-ईमान के इम्तिहान में 'साथी'
माँ पन्नाधाय की सूरत में जाँ-कुर्बान है।

नासमझ ज़िन्दगी

पानी को अपनी आबरू पानी-पानी नहीं लगती
लहरें तूफ़ानी न होती फिर क़श्तियाँ नहीं डूबती

नाज़ायज़ औ ग़ैर क़ानूनी को ज़ायज़ माने बिना
यह कायनात हमें हसीन औ रंगीन नहीं दिखती

जब ज़िन्दगी फरेब है और मौत एक हकीक़त है
दुनिया फिर भी मौत का इस्तकबाल[1] नहीं करती

किसी भी इंसान का हालात से दोस्ती करें बिना
ज़माने में चैन व सुक़ून की ज़िन्दगी नहीं मिलती

जिनकी ज़िन्दगी ज़माने के लिये ज़रूरत की हो
उनकी ज़िन्दगी फिर मरकर भी कभी नहीं मरती

दिल की धड़कने किसी का अहसास हो जाये तो
रूह अपने सिवाय फिर तो किसी की नहीं सुनती

समन्दर के तूफ़ान से जो साहिल[2] पर आ गये तो
उन की ज़िन्दगी फिर तो मौत से भी नहीं डरती

कभी कोई चीज़ पानी के मन मुताबिक़ बने बिना
किसी भी हालात में फिर तो पानी में नहीं तैरती

'साथी' का साथी की रूह से मिलन हो जाने पर
तन की सुन्दरता फिर तो कोई मायने नहीं रखती।

1. इस्तक़बाल=स्वागत **2.** साहिल=किनारा।

इन्सानियत के तसव्वुर

आँखों से अश्क़ नहीं बहा कर पत्थर दिल इन्सान हूँ
मगर दिलो-दिमाग़ को रूलाकर रहम दिल शैतान हूँ

इस लायक़ नहीं कि सरहद पर जाँ क़ुर्बान कर सकूँ
बारूद उगलती ग़ज़लें लिख कर कलम का जवान हूँ

बेगुनाह हो कर गुनाह क्यों और कैसे क़ुबूल कर लूँ
ज़हर का प्याला पी कर सुकरात का दीनो-ईमान हूँ

केसरिया, सफेद, हरे, नीले और पीले रंग का नहीं हूँ मैं
इन्सानियत के रंग में रंग कर सतरंगी हिन्दुस्तान हूँ

फ़रेब, ख़ुदग़र्ज़ी और ज़बरदस्ती से कुछ भी नहीं दूँगा
प्यार औ शराफ़त में सब कुछ लुटाने वाला नादान हूँ

मेरी फ़ितरत और कैफ़ियत[1] प्यासे की दो बूँद प्यास है
मुझे परेशान किया तो दरिया के ख़तरे का निशान हूँ

दिमाग़ की बजाय बेचैन व बेबस दिल की मान कर
ऐसी ख़ुदग़र्ज़ ईमानदारी से ख़ुद के लिये बेईमान हूँ

अहसान को जता देने से सवाब नहीं मिला करते हैं
नेकी को दरिया में डाल कर मैं गुमनाम अहसान हूँ

नाज़ायज़ को हर हालात में ज़ायज़ मान कर 'साथी'
वतन के लिये सब कुछ क़ुर्बान कर जंग का मैदान हूँ।

1. फ़ितरत और कैफ़ियत=आदत और स्वभाव

क्या हो गया है : एक

जो ज़माने की निग़ाहों में गिर गया है
ज़िन्दा होकर भी वह फिर मर गया है

कोई भी बिना चाहत और इन्तज़ार के
बेबस औ बेज़ान होकर ही घर गया है

क़ाबिले-ख़ुद नहीं मगर बातें वतन की
ज़माने के पैर तले उसका सर गया है

सावन औ बसन्त में पतझड़ के अहसास
मासूम बचपन में जब सिंदूर भर गया है

पूनम की रातों में अमावस जैसे तसव्वुर
बेगुनाह माहताब बादलों से डर गया है

रेगिस्तान में प्यासे को पानी की चाहत
भिखारी रोटी के लिये चश्मतर गया है

सिर्फ़ वादे हैं सच के इरादे नहीं 'साथी'
इंसान दिल व दिमाग़ से उतर गया है।

1. महाताब=चाँद **2.** चश्मतर=ग़मगीन।

क्यों हो गया है : दो

दिल में साँसे व धड़कन बनकर गया है
ज़िन्दगी व मौत के जैसा असर गया है

ज़ीस्त[1] को जीया है ज़िंदा दिल बनकर
बेमौत मरकर ज़िन्दगी से बेख़बर गया है

बेवक़्त हरे व भरे शजर[2] का सूख जाना
पानी तो सर के ऊपर से गुज़र गया है

बेचैन औ बेबस मिलन की बेताबी ख़त्म
बेक़रार दरिया का पानी समंदर गया है

बेक़ुसूर इंसान तौहीन और ज़लालत से
इन्सानियत में आँखों से चश्मतर[3] गया है

दिल से मज़बूर होकर ज़िन्दगी में इंसान
सरेआम बेआबरू होकर दरबदर गया है

कलियाँ खिलने से पहले ही मुरझा गई
मासूम अरमानों को कुचल कर गया है

दरिया बिना पानी कैसी दरिया है 'साथी'
बिना इन्सानियत इन्साँ कैसे तर गया है।

1. ज़ीस्त=ज़िन्दगी **2.** शजर=पेड़ **3.** चश्मतर=गमग़ीन।

बदहाल ज़िन्दगी

तौहीन औ ज़लालत से बदनसीब इन्सान हूँ
बिना इज़्जत के जी कर ज़िन्दा शमशान हूँ

इन्सानियत को ईश्वर की ईबादत[1] मान कर
मैं ज़माने की नज़र में हैवान और शैतान हूँ

उसका घर अपना घर समझने का अहसास
मगर उसके दिल में बिन बुलाया मेहमान हूँ

दो वक़्त की रोटी का इंतज़ाम तो मुश्क़िल है
क्या मैं क़ीमती हीरे जवाहरात की खदान हूँ

हवा-पानी के बिना ज़िन्दा रहना नामुमक़िन है
भूख औ प्यास में दरिया[2] व शजर[3] के समान हूँ

बदहाल हो कर कौन जीना चाहता है 'साथी'
घुट-घुट कर जीकर ख़ुदकुशी का अरमान हूँ।

1. ईबादत =पूजा **2.** दरिया=नदी **3.** शजर=पेड़।

बदनसीब इन्सानियत

ज़ालिम दिलों में तो मैं रहम दिल वरदान हूँ
मगर शराफ़त में पैरों से कुचला अरमान हूँ

नफ़रतों को भी वफ़ाओं के अमृत पीला कर
ज़हर पीने वाला नीलकंठ शंकर भगवान हूँ

इंसानियत मेरे तन-मन की सम्पूर्ण संसार है
आख़िरी ख़्वाहिश में मरते वक़्त ऐसा बयान हूँ

सिर्फ़ वतन की ग़ज़लें औ अफ़साने लिखकर
बेरहम दिलो-दिमाग़ में भी ज़िन्दा दास्तान हूँ

पल-पल वफ़ाओं के ख़न्जर से क़त्ल हो कर
ज़माने के लिये मरने वाला दीन औ ईमान हूँ

'साथी' दिल में इन्सानियत औ प्यार की क़श्ती
उल्टी बहती हुई दरिया में ख़तरे का निशान हूँ।

दीपावली ऐसी हो

अम्न, चैन औ सुकून की ज्योति का प्रकाश हो
दिलों में इन्सानियत के तसव्वुर का प्रवास हो

नफ़रत, रन्जिश व गिले शिक़वे के अन्धकार में
प्यार व ऐतबार के चराग़ जलाने के प्रयास हो

ज़हर उगलती ज़ुबाने वतन में ख़ामोश हो जाये
रिश्तों में भाईचारे के प्यार की ऐसी मिठास हो

एक सबके लिये और सब एक के लिए सोचकर
चराग़ से चराग़ जलकर सूरज का अहसास हो

झूठ-फ़रेब, चालाकी और मक़्कारी को जलाने में
दिल के चराग़ में पवित्र सच्चाई की कपास हो

ज़फ़ा के अंधकार से अमावस की काली रात में
वफ़ाओं से सुहानी चाँदनी रातों का विश्वास हो

संयम, विवेक और समझ के मन में दीप जलकर
अज्ञानता को दूरकर निर्मल ज्ञान का उजास हो

मोहमाया के अंतहीन अंधकार से मोहभंग होकर
मन में मोक्ष के मार्ग से परमात्मा का निवास हो

मेहनत, वफ़ा औ ईमानदारी से चमत्कार हो जाये
गणेश के संग लक्ष्मी व सरस्वती का आवास हो

ग़रीबी, भूखमरी, मज़बूरी और कष्टों को ख़त्म कर
वतन में सुख, शांति, समृद्धि व ऐश्वर्य का वास हो

'साथी' सभी मज़हब में ऐसी मुहब्बत हो जाये कि
दिलों में दीवाली और ईद का एक मधुमास हो।

क़रार बेकार है

सुबूत होने के बाद भी बेक़ुसूर गुनहगार है
अँधे क़ानून में दलीलें व गवाही असरदार है

परमेश्वर निराकार रहकर ही तो साकार है
ग़र ईश्वर में आकार है तो उसमें विकार है

नामुमक़िन का मुमक़िन होने का ऐतबार है
ख़यालात में हकीक़त का अक़्स बेशुमार है

ज़मीं व आसमाँ मिल कर एक हो सकते हैं
ज़मीन व आसमान पे यक़ीनन अन्धकार है

जिस इज़हार को ज़ुबाँ बयाँ कर सकती है
उस ग़लत बयानी में फिर कैसा इक़रार है

ख़्वाहिशें औ तमन्नायें जब तक पूरी न हो
दिल की दुआ में तब तक ही चमत्कार है

मोहमाया और मृगतृष्णा को दफ़्न कर दो
ईश्वर से मिलने में फिर न कोई दीवार है

कुछ गज ज़मीं पर कब्ज़ा करके इतराता है
गगन में तो करोड़ों कायनातों का संसार है

रिश्तों में अपनेपन का अहसास नहीं होतो
'साथी' क्या मज़बूरी में रहना ही परिवार है।

जब तक

सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का जब तक ख़याल नहीं है
सोने को मिट्टी के मोल लेने का भी लेवाल[1] नहीं है

इंसान जब तक ख़ुद अपने आप से हलाल नहीं है
तब तक उस को अपने गुनाहों का मलाल नहीं है

दिलो-दिमाग़ पर जब तक कोई बात न लग जाये
तब तक मन में कुछ कर गुज़रने का बवाल नहीं है

ज़वाब देने वाला जब तक सवालात नहीं हो जाये
सवाल जब तक दिल में ज़िंदा दिल सवाल नहीं है

सब कुछ ख़त्म हो जाये तब भी कोई ग़म नहीं है
जब तक हिम्मत नहीं हारें तब कोई बेहाल नहीं है

शराफ़त के चोले में गद्दार है ऐशो-आराम के लिये
ज़िन्दा रहने के लिये बदन बेचे वह दलाल नहीं है

दिल में कुछ, दिमाग़ में कुछ, ज़ुबान पर कुछ और है
नज़रों में सूरत-शीरत एक नहीं तो ज़माल[2] नहीं है

जब तक कोई भी अपने आपको बेआबरू न कर ले
तब तक किसी में बेइज़्जत करने की मज़ाल नहीं है

कोशिशें करने से क़िस्मत भी बदल जाया करती है
'साथी' बन्ज़र ज़मीन में तो कभी भी अकाल नहीं है।

1. लेवाल=खरीददार **2.** ज़माल=सौन्दर्य।

ऐसा करके ही

अपने आपको निराकार करोगे
ख़ुद से ख़ुद में साकार करोगे

कुछ भी नहीं इस जहान में मेरा
जहान को अपना संसार करोगे

अपना सब कुछ लुटाकर ही तो
चराग़े-नूर अपनी मज़ार करोगे

अपनी नज़रों में गिरकर ही तो
ख़ुद को अपना गुनहगार करोगे

अपनी अना[1] को दफ़्न करके ही
अपने तसव्वुर को मयार[2] करोगे

ज़माने से बेख़बर होकर ही तो
अपने आप को ख़बरदार करोगे

नादान और नासमझ बनकर ही
अपने आप को समझदार करोगे

दुनियादारी को समझ कर 'साथी'
अपने आप को कुसूरवार करोगे।

1. अना = अहम् **2.** मयार =उच्च स्तर।

ऐसा करके

ज़वाब में सवाल विचार करोगे
गिले शिक़वों से बेज़ार[1] करोगे

बुरे वक़्त में सहारा बनकर ही
बेग़ाने को भी रिश्तेदार करोगे

हर हालात में ज़ुबान पे क़ायम
दिलों में वजूद वज़्नदार करोगे

परिवार जन्नत के नज़ारे होगें
बड़े बुजुर्गों का सत्कार करोगे

दिल कब किस के काबू में रहा
कैसे दिल को समझदार करोगे

डर के आगे ही तो जीत होगी
जीवन में मौत से क़रार करोगे

मुहब्बत का अहसास कर के ही
'साथी' निग़ाहों को चार करोगे।

1. बेज़ार=उदास

ऐतबार करके

ख़ुद अपने आपसे प्यार करोगे
अपने तन-मन में बहार करोगे

जिसके बिना जीना मुश्क़िल है
उसके लिये जाँ निसार[1] करोगे

माँग में सिन्दूर भर कर ही तो
अपने प्यार को परिवार करोगे

दिल दरिया औ ज़हन[2] समंदर
दुश्मनों को अपना यार करोगे

नादान औ नासमझ बनकर ही
अपने आप को मज़ेदार करोगे

दिन को अन्धेरी रात कह कर
'साथी' साथी में ऐतबार[3] करोगे

'साथी' अपना आईना बन कर
दिलो-दिमाग़ का दीदार करोगे।

1. जाँ निसार=जान न्यौछावर करना **2.** ज़हन=दिमाग़ **3.** ऐतबार=विश्वास।

ऐसा इज़्हार करोगे

प्यार की धुन-झंकार करोगे
मन में आनन्द सितार करोगे

अपना दीवान अख़बार करोगे
पल दो पल का शायर करोगे

बेमन से अपना रोज़गार करोगे
अपने तन-मन से बेग़ार[1] करोगे

दो नावों पर मन सवार करोगे
ख़ुद जीवन को मझदार करोगे

कर्म जो ख़ुद में साकार करोगे
जग में वैसा ही आकार करोगे

ख़ुदग़र्ज़ी में ख़ुदा विचार करोगे
दिली दुआओं को बेकार करोगे

मेहमाँ नवाज़ी में मनुहार करोगे
महफ़िले रौनक़ में बहार करोगे

ज़रूरतमन्दों का सत्कार करोगे
'साथी' ख़ैरात[2] को उपहार करोगे।

1. बेगार=बिना मूल्य का कार्य **2.** ख़ैरात=दान

ज़िन्दगी के रंग

कर्ज़ के दल-दल में बची किसकी इज्ज़त है
उधारी की क़िस्तों से क्या आबरू अस्मत है

तन्हाई में बच्चों की तरह बिलखकर रोता है
क्या पत्थर दिल ज़ालिम इन्सान बेमुरव्वत[1] है

नाज़ायज़ है फिर भी क़त्ल करती है गर्भ में
शर्मो-हया के गहने में बेबस माँ ही औरत है

मज़बूरी में तन को बेचती है मगर ईमाँ नहीं
भूखे-बच्चों के वास्ते माँ का बदन मेहनत है

भूखे-प्यासे भिखारी से भी गया गुज़रा है वो
नफ़रत से ख़ुदगर्ज़ लालची जिसमें नीयत है

नफ़रत की चासनी में ज़ुबान पर ऐसी मिठास
बबूल के शजर में रसीले आम की फ़ितरत है

'साथी' मुहब्बत से ऐसे ख़ुशहाल रहते परिवार
बेहाली में भी रिश्तों में अपनेपन से बरक़त है।

1. बेमुरव्वत = पत्थर दिल

बेबस ज़िन्दगी

ज़र्ज़र बुढ़ापे में जब तंगहाली की ज़िन्दगी
बदनसीबी, बदुआ व बदहाली की ज़िन्दगी

बिना साजन के सावन व बसंत के मौसम
सजनी के शृंगार में लाचारी की ज़िन्दगी

उसको मौत माँगे से नहीं मिला करती है
जिसकी है लाईलाज बीमारी की ज़िन्दगी

ऐसी मौज, मस्ती व ख़ुशियाँ किस काम के
तबाही से नाली में है शराबी की ज़िन्दगी

बर्फ़ जैसी गलन और शोले जैसी अगन है
विरह की वेदना में है बेक़रारी की ज़िन्दगी

बद अच्छा और बदनाम बुरा होता है 'साथी'
दीवानगी व नादानी में जवानी की ज़िन्दगी।

एक दिन

मेहनत का तो ज़रूर फल मिलेगा
अमृत नहीं तो ज़रूर जल मिलेगा

ख़ुदा के यहाँ देर मगर अंधेर नहीं
आज नहीं तो ज़रूर कल मिलेगा

कुछ करोगे तो कुछ देने के लिये
ख़ुदा की रज़ाओं को बल मिलेगा

कुआँ खोदोगे तो ज़रूर एक दिन
झरना नहीं तो ज़रूर नल मिलेगा

तूफाँ में चराग़ से चराग़ जला कर
ज़रूर आफ़ताब जैसा दल मिलेगा

शक़ और शिक़ायत के गुलशन में
रिश्तों में तो आबाद बबूल मिलेगा

ज़ुबान पर क़ायम रहकर ही 'साथी'
हर हाल में जग को क़ुबूल मिलेगा।

1. रज़ा=इच्छा **2.** आफ़ताब=सूरज।

ऐसा ही होगा

आँगन में सुकून का फूल मिलेगा
तन और मन ज़रूर 'कूल' मिलेगा

ब्याज को चुकाते पीढ़ियाँ गुज़री
बही में शेष फिर भी मूल मिलेगा

गुदड़ी में ही लाल मिला करते हैं
कीचड़ में खिलता कमल मिलेगा

हीरे की परख तो जौहरी को ही
अकबर को फिर बीरबल मिलेगा

डूबते हुये को तिनके का सहारा
जाँ को बचाने में सम्बल मिलेगा

ईमान के तिनके-तिनके जोड़कर
झोंपड़ी में फिर तो महल मिलेगा

जो दिमाग़ में है वो ही ज़ुबाँ पर
'साथी' तन-मन से निर्मल मिलेगा।

करनी का फल

रिश्ते में एक दूजे का दखल मिलेगा
महाभारत जैसा फिर दंगल मिलेगा

जैसा करा है वैसा ही फल मिलेगा
दुआओं से फिर दिल मंगल मिलेगा

क़िस्मत में जल नहीं तो क्यूँ ग़म है
मेहनत से तो सहरा[1] में तेल मिलेगा

बिना सोचे विचारे जो काम को करे
पहलवान भी तो फिर निर्बल मिलेगा

बदज़ुबानी व बदनीयती के बीज से
बबूल के शजर[2] पर तो शूल मिलेगा

मुँह में तो राम और बगल में छूरी है
उसको जीवन में ज़रूर छल मिलेगा

रिश्तें में अहसास की गर्मी से 'साथी'
रज़ाई नहीं तो ज़रूर कंबल मिलेगा।

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** शजर=पेड़।

ऐसा ही होता है

नामुमक़िन को मुमक़िन करने लगते हैं
सूनी माँग को सिंदूर से भरने लगते हैं

यह दौलत का ही तो असर ज़माने में
दूर के सम्बन्धी भी पहचानने लगते हैं

ज़फ़ाओं से चमन में ख़िज़ा[1] का मौसम
ख़ुदग़र्ज़ कँटीले शजर[2] सुहाने लगते हैं

जो होना है वह तो होकर ही रहता है
होनी से अन्ध-विश्वास चलने लगते हैं

मरते माँ व बाप की तिजोरी खुलते ही
बेवफ़ा बेटा व बहू भी बदलने लगते हैं

'साथी' ऐतबार[3] में ऐसी करामात है कि
पानी पर पत्थर भी फिर तैरने लगते है।

1. ख़िज़ा=पतझड़ **2.** शजर=पेड़ **3.** ऐतबार=विश्वास।

मज़हब का फलसफ़ा

आराम, विश्राम और पूर्ण विराम है
इन्हीं सब में तो राम और राम है

ग़र मुद्रा ददाति विनयम होगा तो
ऐसा इल्म[1] औ हुनर फिर हराम है

मज़हब के दूध में नीबू निचोड़कर
क्या ऐसे दीनो-ईमाँ फिर इमाम[2] है

जला या दफ़्न करके ख़ाक करना
सबका मिट्टी में मिलना मकाम है

अमीर के तन-मन में दरवेश[3] है तो
ऐसी दौलत को सब का सलाम है

सब कुछ पाकर ऐसा लगता है कि
बिना 'साथी' के तो सब कुछ बेकाम है।

1. इल्म=ज्ञान **2.** ईमाम=धर्म गुरु **3.** दरवेश=सन्त।

ज़िन्दगी का फलसफ़ा

ख़ुदा के हाथों जिस की लगाम है
ज़िन्दगी में फिर आनन्द बेलगाम है

ज़िन्दगी पानी का एक बुलबुला है
किसके लिये फिर इतना संग्राम है

सबको कर्मों के फल ज़रूर मिलेंगे
क़िस्मत तो फिर यों ही बदनाम है

दुआ में सबके हाथ उपर उठते हैं
यानी ख़ुदा का तो एक ही नाम है

ज़मीन से कई बड़े तारे फ़लक़[1] में
ज़मीदार तो क्या ज़मीनें गुमनाम है

ऐसी दौलत किस काम की 'साथी'
भरी गर्मी में भी जिसके जुकाम है।

1. फ़लक़=आकाश।

आईना

ख़ुशहाल-जीवन की डगर है
परिन्दों जैसा जीवन सफ़र है

दोस्त भी दुश्मन की तरह से
पानी के सफ़र में तो मगर है

शर्मो-हया से तो नज़रें नीची
फिर भी तो नीच की ख़बर है

सावन में पतझड़ जैसा मौसम
रिश्तों की ज़मीं फिर बंज़र है

मुँह में राम और बगल में छुरी
ज़ुबान की मिठास में ज़हर है

शैतान में मासूम बचपन 'साथी'
मोम के जैसे पिघला पत्थर है।

अक़्स

पानी में आग उगलते मंज़र है
दिमाग़ में रंज़िश का ख़ंज़र है

तूफ़ान में भी साहिल पे क़श्ती
माँझी पहचान से तो बेख़बर है

सूनी माँग में सिंदूर के जज़्बात
रेगिस्तान में हरा-भरा शजर है

ज़िन्दगी उलझी हुई वर्ग पहेली
ज़िन्दगी में अगर और मगर है

ज़िन्दगी जब पानी की तरह से
निर्मल दिल से गुज़र-बसर है

पानी की तलाश में ये ज़िन्दगी
'साथी' ज़िंदगी रेत का समंदर है।

1. सहरा=रेगिस्तान।

लाचार इल्म

आज के पढ़े लिखे इतने समझदार है
पाँव में काँटें मगर हाथ में तलवार है

नौजवाँ हाथों में पत्थर, बम औ बन्दूकें
बेरोज़गार के पास में ऐसा रोज़गार है

कर्ण तो वैसे भी योद्धा हो ही गया था
आरक्षण के कवच से अर्जुन लाचार है

मेहनत और क़िस्मत का खेल निराला
कर्मवीर के जीवन में क़श्ती मझधार है

बातों से कब तक समझाओंगे किसी को
ज़माने में चमत्कार को ही नमस्कार है

अपने आप से नफ़रत होने लगी 'साथी'
दिलो-दिमाग़ में इन्सानियत व प्यार है।

यह इन्साफ़ नहीं

चाँदनी का चाँद की वफ़ाओं पर ईमान नहीं है
पूनम की रात में क्या चाँद का अपमान नहीं है

ज़माने के लिये जो भी हैवान व शैतान नहीं है
ज़ालिम ज़माने में उसका जीना आसान नहीं है

अपने फ़ायदे के लिये हर क़ायदा मन्ज़ूर जिसे
ऐसे इन्सान को फिर कोई भी नुकसान नहीं है

जुल्मो-सितम सहकर भी जीना मौत के समान
मज़दूर के पास जुबाँ होकर भी जुबान नहीं है

फुटपाथ पर चैन औ सुक़ून की नींद में सोना
मकाँ में दो वक़्त के खाने का सामान नहीं है

बुरे वक़्त में जो अपनों के काम नहीं आ सके
खजूर के शजर में तो आम का ईमान नहीं है

भगवान के दर पर भूख औ प्यास से ही मौत
मन्दिर में भगवान होकर फिर भगवान नहीं है

बहुमत का आतंकवाद ही लोकतन्त्र है 'साथी'
जातिवाद का नाम तो सच में मतदान नहीं है।

क्यों और कैसे : एक

बेबस व मज़बूर दिल क्या व कैसे क़रार करेगा
तौहीन और ज़लालत में ख़ुद को लाचार करेगा

पूनम की चाँदनी रात में काले बादलों का साया
चाँद ज़्यादा से ज़्यादा रात-भर इन्तज़ार करेगा

कितनी परतों को चढ़ाओगे झूठ के काले रंग पे
सफेद रंग कब तक सच्चाई को वफ़ादार करेगा

इस तरह से ज़िन्दगी जब मौत से बदतर है तो
इस तरह से जीकर फिर कैसे ख़ुशगवार करेगा

सौ फ़ीसदी सच भी हर हालात में झूठ ही रहेगा
जब तक नहीं कोई दिल से सच्चा ऐतबार करेगा

'साथी' अक़्सर तैराक की मौत तो पानी में होती
फिर कोई क्यूँ ख़ुद को तूफ़ान में मझदार करेगा।

क्या और कैसे : दो

नादान व दीवाना तो सिर्फ़ दिल से प्यार करेगा
समझकर तो मुहब्बत में फ़ायदे का क़रार करेगा

ख़ुदग़र्ज़ी के चमन में हर डाल पर उल्लू बैठा है
बागवान किस-किस शजर को समझदार करेगा

सागर के पानी में समाना ही नीयती है जिसकी
दरिया कैसे सागर की लहरों को बेक़रार करेगा

एक दिन तो सच सब के सामने आ ही जायेगा
बेगुनाह कब तक ख़ुद को कैसे गुनहगार करेगा

बेबस व मज़बूर होकर प्यार बेवफ़ा हो सकता है
तन-मन से क़ुबूल है तो फिर कैसे इन्कार करेगा

'साथी' झूठा कभी सच हो नहीं पायेगा ज़माने में
झूठ कब तक फिर सच का झूठा कारोबार करेगा।

कैफ़ियत

मन में जितनी जलन है
बदन में उतनी गलन है

नाचता है दिल में मयूर
अपने ख़्याल में मगन है

समन्दर के जैसी गहराई
झील जैसे नीले नयन है

झुककर दुआ और सलाम
कहीं न कहीं से गबन है

आँखों से बहते हुए अश्क़
विरह वेदना की अगन है

मेहनत के बीज ज़मीन में
तक़्दीर हीरे की खनन है

चादर के बाहर पैर पसारे
मान-सम्मान का पतन है

फूल जैसी फ़ितरत[1] 'साथी'
निर्मल इन्साँ का मनन है।

1. कैफ़ियत व फ़ितरत =प्रवृत्ति

बेहाल ज़िन्दगी : एक

जीने की मज़बूरी में लाचारी की ज़िन्दगी
हवस की नज़र में नौकरानी की ज़िन्दगी

ज़िन्दगी मौत से भी बदतर है उसके लिये
बेबस-ईमानदारी में बेईमानी की ज़िन्दगी

किसी को भी मुँह दिखाने के लायक़ नहीं
बेआबरू हो जाने में बदनामी की ज़िन्दगी

समन्दर में बारिश औ सावन में पतझड़ है
फिर कैसे नसीब है ख़ुशहाली की ज़िन्दगी

ऐसे जीने से तो मरना ही बेहतर होता है
बेईज़्ज़ती से शर्मसार बेगुनाही की ज़िन्दगी

दिन-रात मन्दिर में पूजा करके भी 'साथी'
ख़ुदा से दूर रहती है पुजारी की ज़िन्दगी।

बेहाल ज़िन्दगी : दो

दिल में इंसानियत की हसरत है
मुझे फिर ख़ुद आप से नफ़रत है

घुट-घुट कर जीना ज़िन्दगी को
यादगार मौत के लिये कसरत है

दिल औ दिमाग़ एक आईने हैं तो
एक जैसी ही शक़्ल औ सीरत है

नाजायज़ बच्चों को भी पालती है
माँ के जज़्बातों में हौसले मूरत है

मज़ाक में ज़लालतों से ख़ुदकुशी
क्या ऐसी गंदी हरकत शरारत है

मरने के बाद अमृत क्या पिलाना
प्यासे को तो पानी की ज़रूरत है

'साथी' मज़बूरी का फ़ायदा उठाना
इन्सानी शक़्लों में हैवानी सूरत है।

दुनियादारी : एक

बेबस मासूम की जब-जब भी आबरू लुटती है
ख़ुदकुशी की आग में शर्म से अस्मत जलती है

जब-जब इन्सानियत मज़बूर हो कर तड़पती है
तड़प-तड़प कर दिल से बद्दुआयें निकलती है

ज़िन्दगी जब हैरान औ परेशान हो जाती है तो
बेबस और मज़बूर हो कर फिर मौत मचलती है

ख़ुदग़र्ज़ी में अच्छे बुरे की सोच व समझ रखना
ज़माने में रिश्तेदारी धन व दौलत से सवँरती है

प्यार मज़बूर तो होता है मगर बेवफ़ा नहीं होता
चाहत औ क़शिश तो तहखाने में भी महकती है

जब अनायास ही अहसानों में निकलती है दुआ
इबादत[1] फिर तो इनायत[2] व शराफ़त समझती है

कौन किस का साथी बना है बुरे वक़्त में 'साथी'
दुनिया तो गिरगिट की तरह से रंग बदलती है।

1. इबादत = पूजा **2.** इनायत = कृपा

दुनियादारी : दो

जीवन जब उजड़ा हुआ श्मशान
इन्सान फिर ज़िंदा मुर्दे के समान

ख़ुदग़र्ज़ी की दुनियादारी में रिश्ते
अपनों के बीच में भी फिर वीरान

ख़ून के रिश्ते भी होते हैं शर्मसार
इंसान जब-जब हो गया है हैवान

पतझड़ में भी है सावन के मौसम
जब-जब बुर्जुग हो गये हैं जवान

सावन आता है और चला जाता है
मज़बूरी हो जाती है तीरो-कमान

बेगुनाही के सुबूत होते हैं शर्मसार
इन्साफ़ जब भी हो जाता बेईमान

गिले शिक़वे और शिक़ायतें 'साथी'
घर-परिवार होता जंग का मैदान।

ऐतबार

दिल दरिया समन्दर ज़हन है
शख़्सियत में इन्सान गगन है

हर हालात में एक ही परिवार
रिश्तों में जज़्बात की तपन है

सन्तोष में ही तो परम आनंद
नाजायज़ तमन्ना का दमन है

ज़िंदगानी बन जाती है कुन्दन
कुछ कर गुज़रने की लगन है

पतझड़ में है सावन के मौसम
सहरा में फिर आबाद चमन है

जब एक कदम आगे एक पीछे
ज़िंदगानी में कहाँ से चलन है

माँग में जब सिन्दूर भर लिया
सुहागन का सेज पर शयन है

सिर्फ़ और सिर्फ़ देना ही 'साथी'
शजर जैसे जीवन को नमन है।

बेबसी और लाचारी

बहुत ही आसान है मुर्दों के साथ में ज़िंदा रहना
उतना ही मुश्क़िल है ज़िन्दों के साथ मुर्दा बनना

किसी से गिले शिक़वे और शिक़ायतें क्या करना
जब अपना दिल ही नहीं मानता है अपना कहना

वफ़ायें औ शराफ़त ज़लालत से दम तोड़ देती है
इन्सान का जब शैतान व हैवान की चाल चलना

बेचारा जायज़ व मुमक़िन फिर कैसे ज़िंदा रहेगा
बिना ऐतबार के तो हर हालात में बेमौत ही मरना

कोई किसी को कैसे समझायेगा जज़्बात के बिना
दिल में जो जज़्बात है उस को तो वही समझना

कोई नादान और पाग़ल भी ख़ुदकुशी नहीं करता
समझदार बेबस का बहुत ही आसान है ये करना

क्या कोई इतना बेबस व मज़बूर भी हो सकता है
अहसास में एक बेवा[1] का सोलह शृंगार से सजना

ज़िन्दगी और मौत ही जब किसी के नाम कर दी
'साथी' ज़माने में फिर किसी से क्यूँ व कैसे डरना।

1. बेवा=विधवा

शर्मसार बेगुनाह

पूनम को अमावस का चन्दा किया गया
सच्चे को इस तरह से झूठा किया गया

बिना सुबूत और गवाह के भी गुनहगार
उजाले को इस तरह काला किया गया

ख़ुशहाली में तबाही की साज़िशें रचकर
हरियाले शजर को तो सूखा किया गया

बिना एतबार के तो हकीक़त भी शर्मसार
कानों सुनी से, आँख को अंधा किया गया

पल-पल के गिले-शिक़वे व शिक़ायत से
आम के पेड़ को तो, ज़हरीला किया गया

सतरंगी ख़ुशियों से आबाद आशियाने को
नासमझी से बदरंग और गंदा किया गया

'साथी' ख़ून पानी से ज़्यादा गाढ़ा होता है
ख़ून का रिश्ता, शर्म से दरिया किया गया।

क्या हो जाये

जीवन हँसी मज़ाक की किताब हो जाये
तन व मन खिलता हुआ गुलाब हो जाये

दिल पर रिश्ते का अहसास लिखकर ही
ज़िन्दगी में जज़्बातों का हिसाब हो जाये

माँग में सिंदूर भरकर ईरादों का इज़हार[1]
जीवनसाथी हो जाने का ज़वाब हो जाये

दोनों में कौन अच्छा है और कौन बुरा है
यह साबित करने में दोनों खराब हो जाये

किसी का तन पाना कोई बड़ी बात नहीं
मन को जीते तो मन से आदाब हो जाये

किसी के दिखते ही तौबा और बद्दुआयें
ऐसे इंसान का जीना तो अज़ाब[2] हो जाये

ख़ुद के समझने से तो क्या होगा 'साथी'
यदि कोई और समझे तो ज़नाब हो जाये।

1. इज़हार=प्रकट करना **2.** अज़ाब=अभिशाप।

अगर ऐसा नहीं

ऐसा जीवन तो किसी काम का जीवन नहीं
जो किसी जीवन में दिलों की धड़कन नहीं

ऐसे रिश्ते, इन्सान और दौलत किस काम के
तीज त्यौहार पर नहीं खनके वो कंगन नहीं

बिना वज़ह किसी से मिलना व जुलना नहीं
ख़ुदग़र्ज़ी के ऐसे रिश्तों में कोई बन्धन नहीं

बात नहीं करते मगर मुलाक़ात में मुस्कुराते
दोनों के बीच में फिर तो कोई अनबन नहीं

सिर्फ़ बातें करने से कुछ हासिल नहीं होगा
तन-मन में आग न लगे तो वह चिंतन नहीं

लोगों के दिल में वही तो असली मुज़रिम है
अदालत से जिसके नाम पर तो सम्मन नहीं

जब तक आपस में दिल से दिल न मिले तो
मुलाक़ात में एक-दूजे के दिल में नमन नहीं

सावन औ बसंत में पतझड़ का मौसम 'साथी'
दौलत से भी फिर तो बहार का आँगन नहीं।

किस-किस को क्या कहोगे

सूनी माँग में भरे सिंदूर को क्या कहोगे
भोले बचपन पे ख़ंज़र को क्या कहोगे

अपने ख़्वाबों से समझौता गुनाह है तो
ज़िन्दगी के इस सफ़र को क्या कहोगे

जवान बेटे की मौत से माँ-बाप हैरान
तो कटे हुये हरे शजर[1] को क्या कहोगे

शर्मसार है हैवान व शैतान भी जिससे
बेआबरू होने के मंज़र को क्या कहोगे

लानत है ऐसी बेशर्म बेबस सल्तनत पे
शहीदों के कटे हुये सर को क्या कहोगे

आरक्षण से बन्जर ज़मीन में खरपतवार[2]
इल्मी[3] किसान के हुनर को क्या कहोगे

आँख से आँख मिलाने की हिम्मत नहीं
'साथी' फिर ऐसी नज़र को क्या कहोगे।

1. शजर =पेड़ 2. खरपतवार =जंगली घास 3. इल्मी=ज्ञानी ।